वर्ष 50 ★ अंक 07 ★ जुलाई 2023

हँसती दुनिया

₹ 15/-

July 2023 work 1 7/20/2023 2:54:12 PM

हँसती दुनिया

वर्ष 50 ● अंक 07 ● जुलाई 2023 ● पृष्ठ 52

बच्चों के बौद्धिक विकास की अनूठी पत्रिका

(पंजाबी, अंग्रेजी व मराठी में भी प्रकाशित)

प्रकाशक एवं मुद्रक : राज कुमारी

ने सन्त निरंकारी मण्डल, दिल्ली-110009 हेतु एच.टी. मीडिया लिमिटेड, प्लॉट न. 8, उद्योग विहार, ग्रेटर नोएडा-201 306 (उ.प्र.) से मुद्रित करवाकर सन्त निरंकारी सत्संग भवन, सन्त निरंकारी कालोनी, दिल्ली-110009 से प्रकाशित किया।

सम्पादक
विमलेश आहूजा

सहायक सम्पादक
सुभाष चन्द्र

Phone : 011-47660200
Fax : 011-27608215
E-mail : hduniya.hindi@nirankari.org
Website : www.nirankari.org

Available on Website

सदस्यता शुल्क

देश	1 वर्ष	3 वर्ष	5 वर्ष	11 वर्ष
भारत/नेपाल	₹ 150	₹ 400	₹ 700	₹ 1500
यू.के.	£ 15	£ 40	£ 70	£ 150
यूरोप	€ 20	€ 55	€ 95	€ 200
अमेरिका	$ 25	$ 70	$ 120	$ 250
कनाडा/आस्ट्रेलिया	$ 30	$ 85	$ 140	$ 300

अन्य देश : उपरोक्तानुसार अमेरिकी डालर के बराबर राशि देय होगी।

स्तम्भ

4. सबसे पहले
5. सत्गुरु माता सुदीक्षा जी महाराज के दिव्य वचन
6. सम्पूर्ण अवतार बाणी
12. चित्रकथा
22. अनमोल वचन
34. किट्टी
38. कभी न भूलो
44. पढ़ो और हँसो
48. आपके पत्र मिले
50. रंग भरो

July 2023 work 2 7/20/2023 2:55:05 PM

हँसती दुनिया

कहानियां

8. देश का बेटा
– शिवचरण चौहान

10. बादल और समुद्र
– राधेलाल नवचक्र

18. फरफर का 'चाइनीज धागा'
– विजय घनश्यामदास

23. बरगद की मौत
– अंकुश्री

29. सफेद बादल और लापरवाह बंटी
– डॉ. घमंडीलाल अग्रवाल

40. कौए की समझदारी
– सांकलचन्द पटेल

विशेष/लेख

11. कहाँ से आते हैं आसमान में इतने रंग?
– अर्चना

16. पहेलियां
– राधा नाचीज

26. सिनेसिया हॉरिडा
– परशुराम शुक्ल

28. फूल भी खिलते हैं कैक्टस में
– ईलू रानी

42. सहज सलोना चीतल
– अनिता

46. शान्ति निकेतन का वृक्षारोपण पर्व
– श्यामसुन्दर गर्ग

कविताएं

7. बरखा बहार
– महेन्द्र कुमार वर्मा

17. वृक्ष
– बलतेज 'कोमल'

17. सरिता का सन्देश
– सुनील अनुरागी

33. बुलबुल
– मीनू सिंह

33. गौरैया
– महेन्द्र कुमार

39. पावस ऋतु
– रामअवध राम

47. पेड़ लगाएं मिलकर सब
– राजेश निषाद

47. किताब, कछुआ
– डॉ. दिनेश चमोला

July 2023 work 3 7/20/2023 2:55:28 PM

सबसे पहले

YL VNNJK

उपेक्षा का कारण

आज कक्षा में शिक्षक महोदय हिन्दी में विलोम शब्दों का अभ्यास करवा रहे थे और साथ ही पूछ भी रहे थे कि आशा का विलोम बताइए? आवाज आई निराशा। विश्वास का विलोम बताइए? आवाज आई अविश्वास। इसी तरह अनेकों शब्दों के साथ अन्त में पूछा कि सन्तुष्ट का विलोम? सभी बच्चों ने एक स्वर में कहा असन्तुष्ट। शिक्षक ने सभी को शाबाशी दी और पूछा कि आप सभी यह बताईये कि आप में से कौन–कौन असन्तुष्ट हैं। लगभग सभी बच्चों ने हाथ खड़ा किया और बारी–बारी से अपने असन्तुष्ट होने का कारण बताया।

लगभग सभी बच्चे कक्षा में प्रथम आना चाहते हैं, एक–दूसरे से आगे बढ़ना चाहते हैं, साथियों से अच्छे व्यवहार की अपेक्षा करते हैं और अधिकतर धनी बनने की चाह भी रखते हैं इत्यादि। साथ में यह भी बताया कि हमें अभी से बेचैनी होती है कि यह हमें मिलेगा या नहीं।

''आज अधिकतर यही धारणा बनती जा रही है और कोई विरला ही इससे अछूता है'', इस प्रकार शिक्षक महोदय ने कहना आरम्भ किया और बताया कि व्यक्ति असन्तुष्ट इसलिए रहता है कि जो भी उसे मिलता है वह उससे अधिक पाना चाहता है। विद्यार्थी परीक्षा में प्रथम आकर भी सन्तुष्ट नहीं होते। पैसे वाले धन पाकर भी सन्तुष्ट नहीं होते अर्थात् अधिक होने की चाह उन्हें सदा अपनी ओर खींचती ही रहती है। शिक्षक महोदय ने एक उदाहरण से बताया– ''एक बार एक व्यक्ति बहुत परेशान था और घर के बाहर सभी से रोज कहता था कि मुझे व्यापार में पाँच लाख की हानि हुई है। उसकी सारी खुशी इसी हानि के कारण दुख में बदलती जा रही थी। एक सज्जन उनको परेशानी में देखकर उनके घर पर पहुँचे और इसका कारण जानने की कोशिश की। इस पर उस व्यक्ति की पत्नी ने बताया कि मेरे पति को पाँच लाख का लाभ हुआ है परन्तु वे इसको पाँच लाख का नुकसान बता रहे हैं क्योंकि वे अनुमान लगाकर बैठे थे कि हर हालत में उन्हें दस लाख का लाभ होगा। इस गणित से वे पाँच लाख की हानि मान रहे हैं। यही उनकी परेशानी और चिन्तित रहने का कारण है।''

यह सुनते ही कुछ बच्चे हँसने लगे और कुछ गंभीर हो गए। सभी ने अपनी–अपनी बुद्धि के अनुसार इस उदाहरण से सीख ली।

साथियों! कहीं हम भी इतनी बड़ी अपेक्षा तो नहीं कर बैठते क्योंकि जितनी बड़ी अपेक्षा होगी उसका पूरा न होने पर असन्तोष तो उतना ही अधिक होगा। व्यक्ति को काल्पनिक आशाएँ बाँधने से कोई रोक नहीं सकता लेकिन वास्तविकता का सामना तो उसे स्वयं ही करना होता है।

दूसरों से अपेक्षा करके हम स्वयं की उपेक्षा कर लेते हैं और अपने आत्म–सम्मान को ठेस पहुँचाते हैं। जब हमें अपने पर अविश्वास होता है अथवा अपनी योग्यता पर सन्देह होता है और कर्म करने में पूरी शक्ति नहीं लगाते तभी हमारा ध्यान दूसरों पर निर्भर होना शुरू कर देता है। यही निर्भरता की अपेक्षा अपनी उपेक्षा का कारण बन जाती है। हमें निरन्तर अपने–आप में ही सामर्थ्य, योग्यता और आत्म–विश्वास का विस्तार करना होगा और अपनी विचारधारा, सोच को सकारात्मक रखना होगा। यही हमारे सफल व्यक्तित्व का कारण बनने में सार्थक होगा।

– **विमलेश आहूजा**

July 2023 work 4 7/20/2023 2:55:33 PM

सत्गुरु माता सुदीक्षा जी महाराज के दिव्य वचन

- ज्ञान और कर्म के संगम से ही जीवन सार्थक होगा। मर्यादा, अनुशासन में रहकर सेवाएँ निभाएँ। ऐसा करके, भक्त हर समय आनंद की अवस्था में रहते हैं।
- संकीर्ण भावनाएँ हमारे दिल के दायरे को इतना छोटा कर देंगी कि हम उन दायरों में ही कैद होकर रह जाएँगे।
- तंगदिली मन में ही नहीं, सोच और दिमाग में भी आ जाती है। हम इतने संकीर्ण हो जाते हैं कि विशाल सोच वाले भी हमें पसन्द नहीं आते। हमने अपनी सोच और दिल को विशाल करना है।
- जीवन में परिवर्तन को सहज भाव से स्वीकार करें। इस जीवनकाल में बहुत कुछ होते हुए भी हमने मन में शांति और स्थिरता रखनी है। यह तभी संभव है जब हम इस स्थिर प्रभु–निरंकार से जुड़ जाते हैं।
- मनुष्य अंधकार में जीवन जीता है। बिना बुद्धि और विवेक का इस्तेमाल किए आधारहीन बातों को ही सही मान लेता है। सन्तजन मानव को सत्य की राह दिखाते हैं।
- भक्ति प्रवाह के साथ बहने वाला सहज भाव है। भक्ति मन का अहंकार त्यागकर जीवन में सहज रूप से आगे बढ़ने का सरल मार्ग है जिससे भक्त बंधनमुक्त होकर आनंदमय जीवन जीता है।
- निराकार हर बंधन को काटने वाला है, तरह–तरह के वहमों–भ्रमों और अंधविश्वासों को दूर करने वाला है। यह अज्ञान के अंधकार से निकालकर सच्चाई दिखाई वाली रोशनी है। हमें ज्ञान की इस रोशनी में ही विचरण करना है।

July 2023 work 5 7/20/2023 2:55:38 PM

हमारे पवित्र ग्रंथ

सम्पूर्ण अवतार बाणी

पद संख्या 279

बन्दे काहनूं सोचां कर कर ऐवें वक्त गंवाना एं।
याद हरि दी पल पल कर लै जिस तेरे कम आणा एं।
जिसदा हुकम चले दिन रातीं सूरज धरती पाणी ते।
जिसदा हुकम चले दिन रातीं दुनियां दे हर प्राणी ते।
जिसदे हुकम बिना इस जग ते पत्ता वी नहीं हिल सकदा।
जिसदे हुकम बिना इस जग ते इक तिल वी नहीं मिल सकदा।
जो एह कुल मख़लूक बणा के आपे इस नूं पाल रिहै।
जो एह कुल प्रपंच रचा के सारी खेड संभाल रिहै।
तेरी चिन्ता एहो करसी एहदा नाम ध्याई जा।
कहे अवतार गुरु नूं मिल के एसे दे गुण गाई जा।

भावार्थ : उपरोक्त पद में बाबा अवतार सिंह जी बता रहे हैं कि इन्सान सोच–सोचकर व्यर्थ में अपना समय गंवाता है। अनावश्यक सोच–विचार से उत्तम है पल–पल इस प्रभु–परमात्मा को याद करना। इन्सान की सोच यदि सही होगी तो वह नर्क को स्वर्ग में बदल देगा और सोच खराब होगी तो वह स्वर्ग को भी नर्क बना देगा। परमात्मा को अपनी यादों में बसाने से जो उत्तम सोच बनती है वह हमेशा कल्याण करने वाली होती है।

अपनी सोच में हमेशा इस परमात्मा को बसाना है, जिसका हुक्म सूर्य, चाँद, धरती, पानी सब पर दिन–रात चलता है। प्रकृति के ये अंग इस प्रभु के हुक्म में रहकर मर्यादित ढंग से अपना कार्य करते हैं। इस परमात्मा का हुक्म दुनिया के हर प्राणी पर दिन–रात चलता है। यह परमात्मा सर्वशक्तिमान है इसके हुक्म के बिना एक पत्ता भी नहीं हिल सकता।

हे इन्सान! तू ऐसे प्रभु की याद पल–पल करता जा, जो कठिन समय में यही तेरे काम आएगा।

परमात्मा की बनाई सृष्टि पर बहुत कुछ मौजूद है परन्तु इसकी आज्ञा के बिना किसी को एक तिल भर भी कुछ नहीं मिल सकता है। सृष्टि का यह सारा खेल इस प्रभु–परमात्मा ने स्वयं रचाया है और सारा खेल यह स्वयं ही संभाल रहा है। सारी सृष्टि को इसने ही रचा है और सभी जीव–जन्तुओं को बनाकर इनका पालन–पोषण भी यह स्वयं ही कर रहा है। सन्तों–भक्तों ने इसे जगत प्रपंच भी कहा है, जो आसानी से इन्सान की समझ में नहीं आता है।

बाबा अवतार सिंह जी समझा रहे हैं कि जो प्रभु सबको संभाल रहा है वही तुझे भी संभालेगा। तू इसका ध्यान किए जा, तेरी चिंता भी यही करेगा। तू सत्गुरु से मिलकर इसका बोध प्राप्त कर ले और अपनी सोच–विचार में इसको बसाकर इसका ही गुणगान करता जा।

भावार्थ : हरजीत निषाद

July 2023 work 6 7/20/2023 2:55:39 PM

बरखा बहार

बाल कविता : महेन्द्र कुमार वर्मा

इठलाती, लाई फुहार,
देखो आई बरखा–बहार।

रिमझिम–रिमझिम झड़ी लगाई,
प्रकृति कैसी है मुस्काई।
लहराते पत्ते–पत्ते पर,
हरियाली इसने बिखराई।।

ऋतुओं ने है किया श्रृंगार,
देखो आई बरखा बहार।

झूम उठा मौसम चितचोर,
नाच उठा जंगल में मोर।
माटी की सौंधी खुशबू से,
धरती–अंबर हुए विभोर।।

छलका प्रकृति का है प्यार,
देखो आई बरखा बहार।

सूरज खेले आँख–मिचौली,
जब आए मेघों की टोली।
झींगुरजी की तान निराली,
पंछी कलरव से बगिया डोली।।

उपवन हुए हैं गुलजार,
देखो आई बरखा बहार।

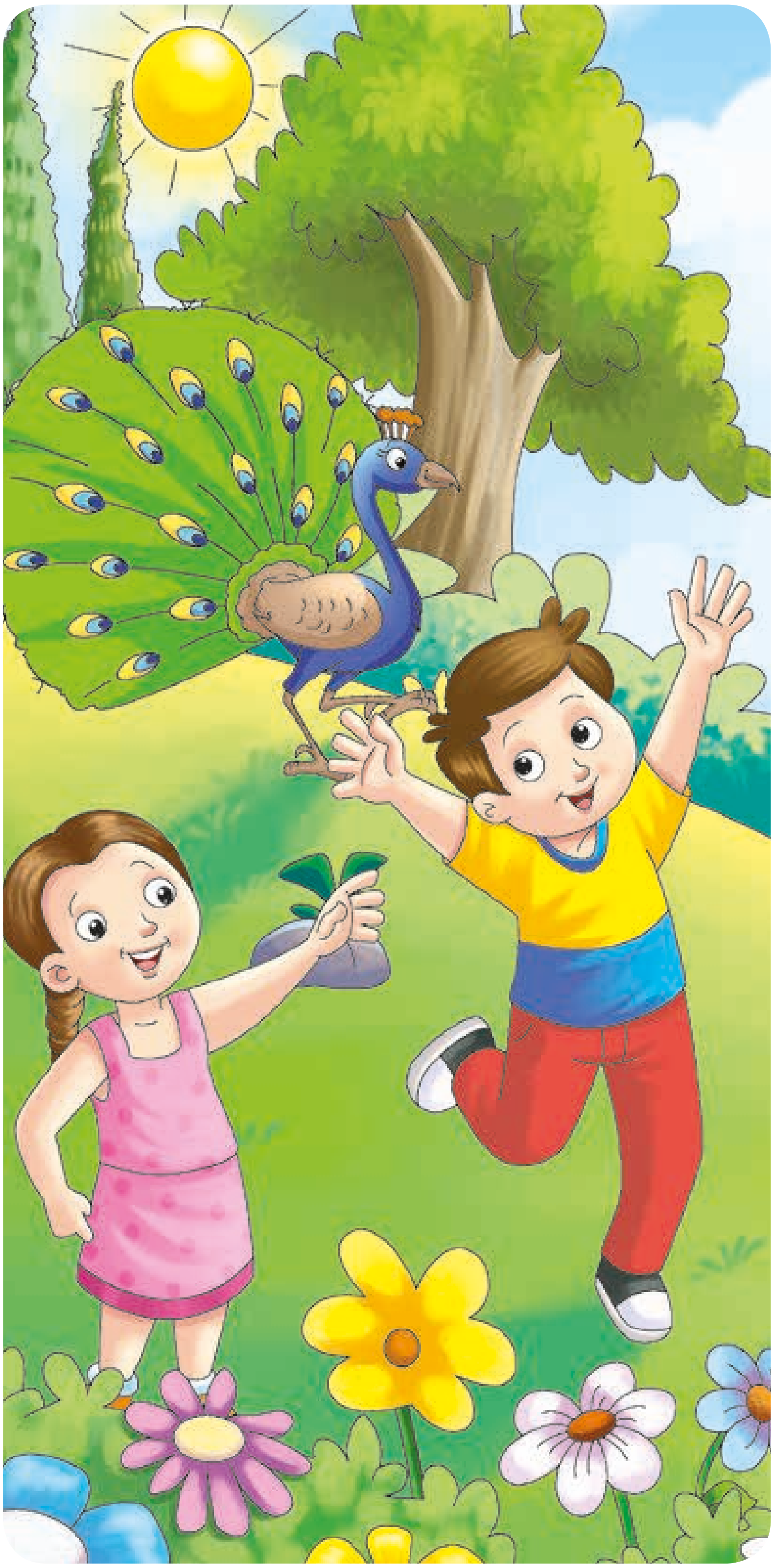

July 2023 work 7 7/20/2023 2:55:40 PM

देश का बेटा

इतिहास कथा : शिवचरण चौहान

महाराज कृष्णदेव राय, विजयनगर साम्राज्य के सम्राट थे। वह वीर और न्यायप्रिय शासक थे। पड़ोसी राज्य के राजा चन्द्रशेखर उनके मित्र थे।

एक बार तंजौर के शासक राजा वीरशेखर ने चन्द्रशेखर पर हमला कर दिया। वीरशेखर, चोलवंश का था और चोलवंश के राजा विजयनगर की बढ़ती कीर्ति के कारण कृष्णदेव राय के दुश्मन बने हुए थे। चन्द्रशेखर पर हमले की खबर पाकर महाराज कृष्णदेव राय ने अपने सेनापति नागमाराव नायक को बुलवाया और चन्द्रशेखर की मदद करने को भेजा। नागमाराव नायक ने वीरशेखर की सेनाओं को खदेड़ दिया किन्तु उसका मन चन्द्रशेखर का सम्पन्न राज्य देखकर बिगड़ गया। उसने चन्द्रशेखर को तो बन्दीगृह में डलवा दिया और स्वयं राजा बन बैठा किन्तु चन्द्रशेखर का बेटा अनन्तशेखर भाग खड़ा हुआ। उसने महाराज कृष्णदेव राय के दरबार में उपस्थित होकर नागमाराव नायक की करतूत बयान की। अपने सेनापति की गद्दारी सुनकर महाराज कृष्णदेव राय का खून खौल उठा। उन्होंने राज्यभर में मुनादी करवा दी कि जो भी व्यक्ति नागमाराव नायक को जिन्दा या मुर्दा पकड़कर लाएगा उसे ईनाम दिया जाएगा।

मुनादी करवाए एक सप्ताह हो गया पर किसी ने महाराज के सामने आकर बागी सेनापति नागमाराव को गिरफ्तार करने की चुनौती स्वीकार नहीं की। आखिर महाराज कृष्णदेव राय ने एक दिन भरे दरबार में घोषणा की कि वह स्वयं नागमाराव को गिरफ्तार करने जाएंगे। तभी एक युवक दरबार में आया उसने कड़ककर कहा— महाराज! मैं जाऊँगा सेनापति को गिरफ्तार करने और जिन्दा या मुर्दा जिस रूप में सम्भव हुआ, मैं उसे आपके चरणों में डाल दूँगा।

महाराज आश्चर्य में आ गये क्योंकि वह युवक और कोई नहीं सेनापति नागमाराव नायक का बेटा विश्वनाथ राव नायक था। महाराज बोले— सेनापति के पुत्र, सोच लो, क्या तुम जो कह रहे हो कर पाओगे?

—क्यों नहीं महाराज!— युवक विश्वनाथ राव नायक दृढ़ता से बोला— मैं सेनापति नागमाराव का बेटा होने से पहले इस देश का बेटा हूँ। मैंने इस मिट्टी का अन्न व नमक खाया है। इसलिए मातृभूमि की आन के लिए मैं अपने को कुर्बान करना भी जानता हूँ।

महाराज कृष्णदेव राय मान गये। उन्होंने विश्वनाथ राव को एक बड़ी सेना देकर नागमाराव को गिरफ्तार करने भेजा।

July 2023 work 8 7/20/2023 2:55:41 PM

नागमाराव नायक ने जब देखा कि उसका ही बेटा भारी फौज लेकर उसे गिरफ्तार करने आया है तो उसने एक खास दूत भेजकर अपने बेटे को कहलवाया कि उसने जो कुछ भी किया है, तुम्हारे लिए किया है। मेरे बाद यहाँ की गद्दी के उत्तराधिकारी तुम ही बनोगे।

इस पर विश्वनाथ राव ने अपने पिता को जवाब भिजवाया– पिताश्री, मैं पहले विजयनगर का बेटा हूँ बाद में आपका। आपने अपने स्वामी और देश के साथ गद्दारी करके अब पिता कहलाने का हक भी समाप्त कर दिया है। आपकी भलाई इसी में है कि आप तुरन्त आत्म–समर्पण कर दें।

नागमाराव नायक ने कई चालें चलीं कि उसका बेटा उसके जाल में फंस जाए पर वह असफल रहा। अन्त में बाप–बेटे की सेनाओं में घनघोर युद्ध हुआ। बाप–बेटे आमने–सामने तलवारें खींचकर आ गये। नागमाराव, असाधारण वीर था, कभी किसी से हारा नहीं था किन्तु आज उसका ही बेटा, उससे भारी पड़ रहा था। दिनभर युद्ध के बाद नागमाराव पराजित हुआ। विश्वनाथ राव अपने पिता की मुश्कें बांध उसे विजयनगर लाया और महाराज कृष्णदेव राय के सामने खड़ा कर दिया।

महाराज कृष्णदेव राय, विश्वनाथ राव से बहुत प्रसन्न हुए और बोले– विश्वनाथ, तूने आज वह कर दिखाया जिसकी मिसाल इतिहास में बहुत कम मिलती है। तुमने विजयनगर के नमक का फर्ज अदा कर दिया अब तुम चाहे तो विजयनगर का राज्य भी मांग लो मैं दे डालूँगा।

विश्वनाथ राव महाराज कृष्णदेव के चरणों में गिर पड़ा– महाराज, मुझे विजयनगर का साम्राज्य नहीं चाहिए। कर सकें तो मेरे पिता को माफ कर दें। ये भटक गये थे।

महाराज कृष्णदेव राय हैरान रह गये– अरे अभी तक अपने पिता के खून का प्यासा बेटा उसकी जिन्दगी मांग रहा है।– थोड़ा सोचकर महाराज बोले– विश्वनाथ, तुम्हारी वजह से मैं तुम्हारे पिता को सारे अपराधों से मुक्त कर आजाद करता हूँ और तुम्हें अपना रक्षा सलाहकार बनाता हूँ।

विश्वनाथ राव नायक ने अपने पिता के बन्धन अपने हाथों से खोले तो पिता की आँखों में आँसुओं की धारा बह चली। नागमाराव नायक ने बेटे को गले लगा लिया और बोला– पिता अपने बेटे को गलत रास्ते पर जाने से रोकता है पर यहाँ तो उलटा हुआ तूने अपने पिता को गलत रास्ते जाने पर उसे खींचकर कुकर्म से बचा लिया। मैं धन्य हो गया।

दरबार, विश्वनाथ राव और नागमाराव नायक की जयकारों से गूंज उठा। ◆

July 2023 work 9 7/20/2023 2:55:42 PM

बादल और समुद्र

ijd&ilx % jkèkyky ^uopØ*

एक दिन समुद्र ने बादल से पूछा– मेरा जल तो खारा है। कोई पशु–पक्षी तक पीना नहीं चाहता। फिर तुम मेरे जल को लेकर क्या करना चाहते हो?

–बरसकर जरूरतमंदों को देता हूँ।– बादल ने जवाब दिया।

–भला खारे जल की जरूरत किसे पड़ती है?– समुद्र को बादल की बात समझ में नहीं आई।

बादल बोला– जब तक वह जल आपके पास है, तभी तक खारा है। मेरे ग्रहण करने के बाद वह मीठा हो जाता है।

–वह कैसे?– समुद्र उत्सुक हो उठा।

–आप दूसरे से जितना लेते हैं, उस अनुपात में दूसरे को कम देते हैं। यही वजह है कि आपका जल सदा खारा रहता है।– बादल ने आगे कहा– मगर मैं जितना जल आपसे लेता हूँ, कुछ भी अपने पास नहीं रखता। सब दूसरों को दे देता हूँ। यही मुख्य कारण है कि आपके पास से जब जल मेरे पास आता है तो वह खारा से मीठा हो जाता है। उसमें कुछ भी खारापन नहीं रहता।– बादल ने समझाया।

बादल की तर्कसंगत बातें सुनकर समुद्र चुप हो गया। ◆

तीन चीजें

- ❖ तीन चीजों में मन लगाने से फायदा होता है – ईश्वर, मेहनत, विद्या।
- ❖ तीन का हमेशा सम्मान करना चाहिए – माता–पिता, मेहमान, गुरु।
- ❖ तीन चीजों से हमेशा बचना चाहिए – बुरी संगति, स्वार्थ, निन्दा।
- ❖ तीन चीजें जीवन में एक ही बार मिलती हैं – माता–पिता, जवानी और मानव जन्म।
- ❖ तीन के लिए मर मिटो – देश, सद्धर्म, मित्र।
- ❖ तीन बातें मत भूलो – सद्उपदेश, उदारता, उपकार।
- ❖ तीन का संग्रह करो – अच्छी पुस्तकें, अच्छे मित्र, अच्छे कार्य।
- ❖ तीन का सामना करो – शत्रु, अत्याचार, संकट।

July 2023 work 10 7/20/2023 2:55:43 PM

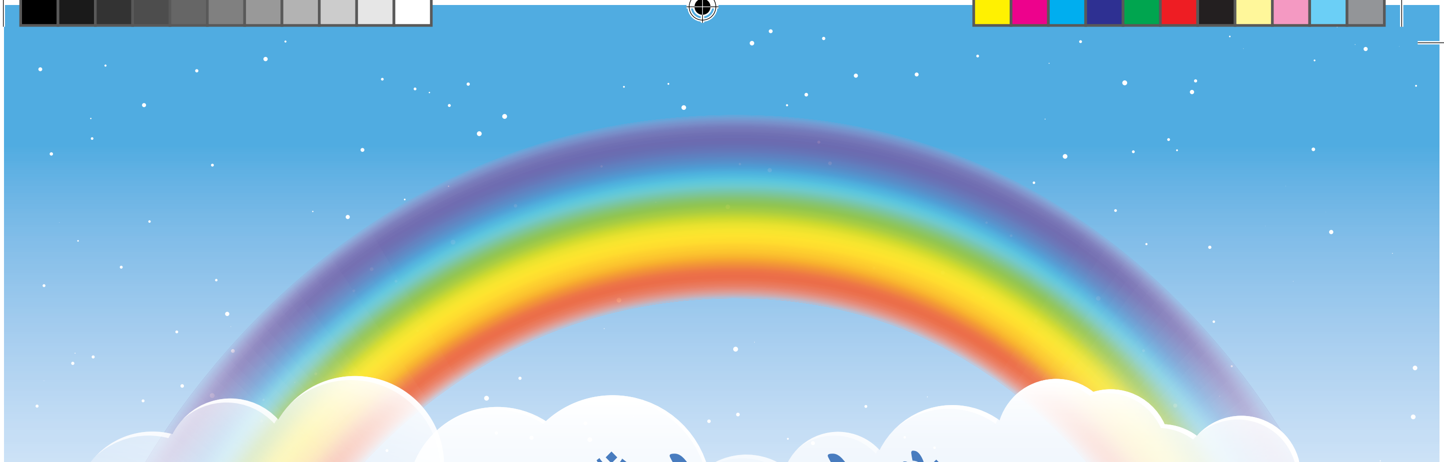

कहाँ से आते हैं आसमान में इतने रंग?

tkudkjh % vpluk

दोस्तों! तुमने बरसात के मौसम में रंग–बिरंगी आभा वाला 'सतरंगा इन्द्रधनुष' तो जरूर देखा होगा। लेकिन तुमने कभी सोचा है यह आसमान में बनता कैसे है? कहाँ से आसमान में इतने रंग आते हैं, जो दूर–दूर तक इन्द्रधनुष की पट्टी को पोत देते हैं? आओ, रिमझिम के इस हसीन मौसम में तुम्हें बताते हैं– 'इन्द्रधनुष' बनता कैसे है?

वर्षा के मौसम में आसमान में पानी की नन्हीं–नन्हीं बूँदें मौजूद रहती हैं। पानी की इन बूँदों में से जब सूरज की सफेद किरणें गुजरती हैं तो वे सात रंगों में बंट जाती हैं। हाँ, जब श्वेत किरणें विशाल रूप से सतरंगी किरणों में टूटती हैं तो वह हमें आसमान का सतरंगा हार यानी इन्द्रधनुष के रूप में दिखाई देती हैं।

यह एक अचरज की बात है– इन्द्रधनुष हमेशा सूरज की विपरीत दिशा में ही दिखाई देता है। इसमें दिखाई देने वाले सात रंग हमेशा एक क्रम में ही होते हैं। पहले बैंगनी, नीला, आसमानी, हरा, पीला, नारंगी और अन्त में लाल।

बरसात के दिनों जब आसमान में इन्द्रधनुष का हसीन नज़ारा दिखाई दे तो इसे अपने घर की ऊँची छत से निहारें। लोकजीवन में ऐसी धारणा है कि वर्षा में इन्द्रधनुष निहारने से आँखों की रोशनी में वृद्धि होती है तथा स्मरण शक्ति तेज होती है।

अफ्रीका की धरती पर एक पौधा ऐसा भी है। जिसमें इन्द्रधनुष की आकृति का फूल खिलता है तथा पुष्प में इन्द्रधनुष की भांति सुन्दर–सुन्दर रंगों की रचना होती है। इस फूल को वैज्ञानिक भाषा में 'रेनबो' के नाम से जाना जाता है। इस फूल में मनमोहक भीनी–भीनी खुशबू भी होती है। यह फूल अक्सर जुलाई से सितम्बर के मध्य ही खिलता है।

और, यह भी जान लें जहाँ दूर–दूर तक हरे–भरे घने जंगल फैले होते हैं। वहाँ के आसमान में छोटे–छोटे हरे रंग के इन्द्रधनुष कुदरती बनते हैं। इन इन्द्रधनुष को कई स्थलों पर 'इन्द्रदेव' के पेड़–पौधों के नाम से जाना जाता है।

इन्द्रधनुष हमें यह शिक्षा देता है– अपने जीवन में सात रंग भरो और जीवन में खुशियों के सतरंग बाँटो और खुशहाली के मधुर गीत गुनगुनाओ। ◆

July 2023 work 11
7/20/2023 2:55:43 PM

चित्रकथा

चित्रांकन एवं लेखन : अजय कालरा

July 2023 work 13 7/20/2023 2:55:46 PM

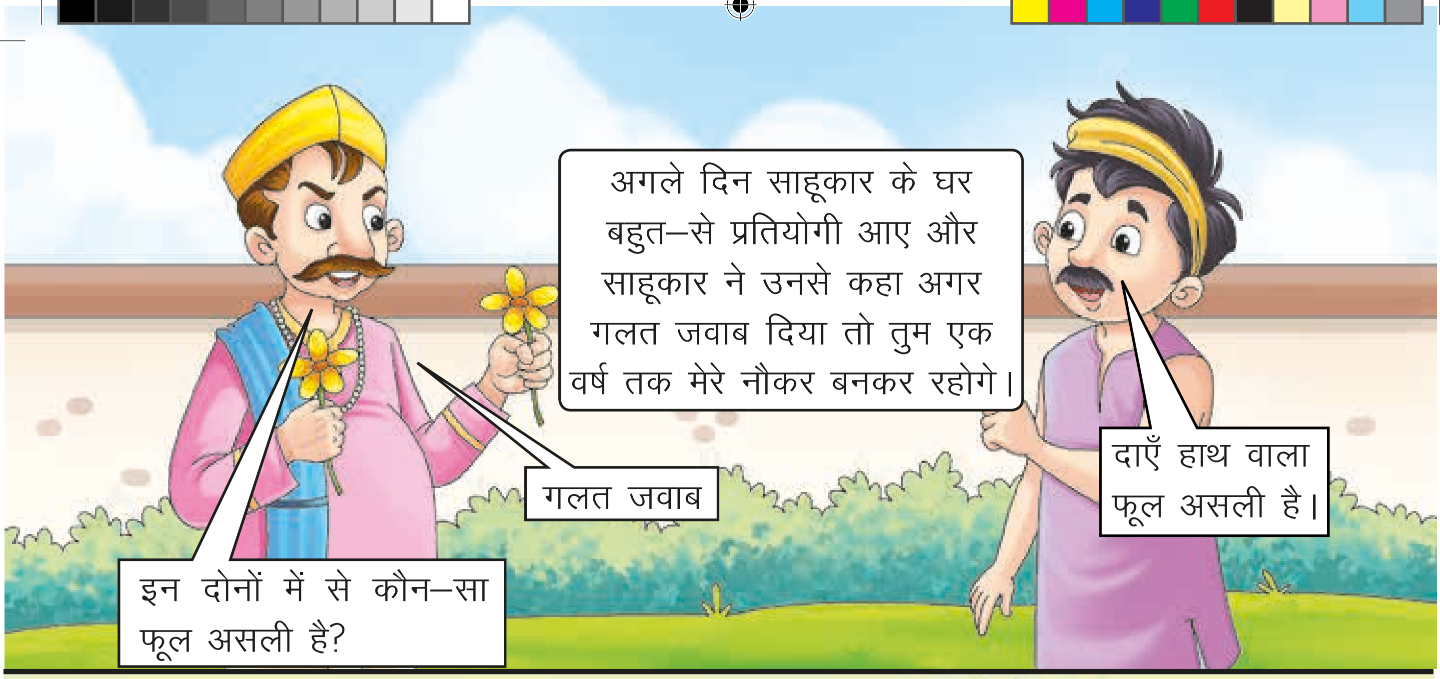

July 2023 work 14 7/20/2023 2:55:48 PM

July 2023 work 15 7/20/2023 2:55:50 PM

पहेलियां

प्रस्तुति : राधा नाचीज

1. मुख से सदा मुझे बोलो,
   तो सम्मान तुम्हारा है।
   उस पर कोई आंच नहीं,
   जिसने मुझे संवारा है।।

2. एक किले में चोर बसे हैं,
   सबका मुँह है काला।
   पूँछ पकड़कर आग लगाई,
   झट कर दिया उजाला।।

3. एक नारी का मैला रंग,
   लगी रहे वह पी के संग।
   रोशनी में संग विराजे,
   अंधेरे में छोड़ के भागे।।

4. एक अनोखी ऐसी चीज,
   उजली धरती काला बीज।
   जो हैं इससे करते प्यार,
   वे बन जाते होशियार।।

5. एक बड़ी एक छोटी नार,
   एक ही नाम धरा करतार।
   छोटी ज्यादा महंगी आए,
   मुँह को तनिक में तर कर जाए।।

6. एक बगिया में फूल अनेक,
   उन फूलों का राजा एक।
   बगिया में जब चंदा आए,
   बगिया चम–चम खिल–खिल जाए।।

7. एक वस्तु को हमने देखा,
   छाती ऊपर दाँत।
   बिन मुख गावे राग रागिनी,
   करे रसीली बात।।

8. घर में उछलकूद करता,
   नीली आँखों से मैं डरता।
   घर में जो कुछ मिल जाता,
   कुतर–कुतर उसको खा जाता।।

9. पोर्टलैंड सीमेंट जिससे,
   बनते इमारत और मकान।
   नाम बताओ उस वैज्ञानिक का,
   जिसने किया महान आविष्कार।।

(पहेलियों के उत्तर किसी अन्य पृष्ठ पर देखें)

July 2023 work 16 7/20/2023 2:55:51 PM

वृक्ष

बाल कविता : बलतेज 'कोमल'

वृक्ष हमारे लिये वरदान।
कुदरत की ये भेंट महान।

चले पवन यह महक बिखेरें,
कुछ देने से मुँह न फेरें।
पक्षियों के लिए मकान,
वृक्ष हमारे लिए वरदान।।

देते फल, लकड़ी व छाया,
दानवीर है इनकी काया।
हैं सबके लिए मेहरबान,
वृक्ष हमारे लिए वरदान।।

करते कुदरत का शृंगार,
धरती जाती है बलिहार।
ऑक्सीजन की उत्तम खान,
वृक्ष हमारे लिए वरदान।।

मत लगाना काटकर ढेर,
इनके बिन जीवन अंधेर।
मत बनना मूर्ख नादान,
वृक्ष हमारे लिए वरदान।।

सरिता का सन्देश

कविता : सुनील अनुरागी

कल–कल करती बहती आयी,
बोलो वह क्या कहती आयी।

प्रेम की गंगा तुम बहाओ,
सुख की दुनिया तुम बसाओ।

कर्म मेरा बस बहते जाना,
ऐसा ही लक्ष्य तुम्हें बनाना।

वाष्प, मेघ बन फिर आना,
धरती पर हरियाली लाना।

जीवनदायिनी जीवन देती हूँ,
कृषक, वनों को हर्षाती हूँ।

उन्नत जग हो, है कामना मेरी,
करो न बच्चो, काम में देरी।

July 2023 work 17 7/20/2023 2:55:53 PM

फरफर का 'चाइनीज धागा'

कहानी : विजय घनश्यामदास खत्री

पतंगोत्सव में कुछ ही दिन बाकी थे। सभी पतंगे बहुत खुश थीं। वे अभी से ही आसमान में उड़ने के लिए उछल रही थीं। पतंगे ये सोचकर बहुत आनंदित थीं कि कल वे आसमान में उड़ने का खूब आनंद लूटेगीं, पंछियों से बातें करेंगी, बादलों के देश में जाएंगी। वाह, कितना मजा आएगा।

मगर घमंडी 'फरफर पतंग' कुछ और ही सोच रही थी। उसने सोचा कि ''मैं चाइनीज धागे से जुड़कर उडूँगी। दूसरी पतंगों से खूब पेच लड़ाऊँगी। आसमान में आकाशी युद्ध होगा तो कोई पतंग मेरे आगे टिक नहीं पाएगी। मैं सभी पतंगों को काटकर आसमान से नीचे न गिरा दूं तो मेरा नाम फरफर नहीं। विजेता मैं ही बनूँगी।''

उसकी इस बात का पता जब अन्य पतंगों को चला तो वे दुखी हो गईं। एक समझदार पतंग ने उसे समझाते हुए कहा, ''फरफर, तुम्हारी यह सोच ठीक नहीं है। तुम्हें पता भी है, तेज तलवार–सा चाइनीज धागा कितना घातक होता है? उससे हर साल कितने निर्दोष पंछी और इन्सानों की जान चली जाती है। हमें पतंगोत्सव के पर्व पर चाइनीज, नायलोन या काँच लगे हुए मांझे का इस्तेमाल नहीं करना चाहिए।''

मगर फरफर कहाँ मानने वाली थी? उसने मुँह बनाते हुए कहा, ''ओह! तो तुम सब अभी से मुझसे पेच लड़ाने से डर रही हो इसलिए ऐसी बातें कर रही हो। लेकिन मैंने तय कर लिया है कि मैं पतंगोत्सव के दिन चाइनीज धागे के साथ उडूँगी। फिर देखना, किसी की क्या मजाल कि मुझे कोई हरा सके।''

सभी पतंगों ने फरफर को समझाने की बहुत कोशिश की। मगर फरफर ने किसी की एक न सुनी।

दूसरे दिन पतंगोत्सव के दिन सभी पतंगे सुबह–सुबह जल्दी जग गईं। हवा भी उन्हें साथ देने के लिए तेजी से चल रही थी। तेज हवा में उड़ने के लिए वे उछल रही थीं। बच्चे भी अपनी–अपनी पतंगों के साथ पतंगोत्सव का आनंद लूटने के लिए उत्साहित थे। बच्चे और युवा अपने–अपने घर की छत पर पतंगे लेकर खड़े थे। हवा का जोर धीरे–धीरे बढ़ रहा था। देखते ही देखते आसमान रंग–बिरंगी पतंगों से भरने लगा। लाल,

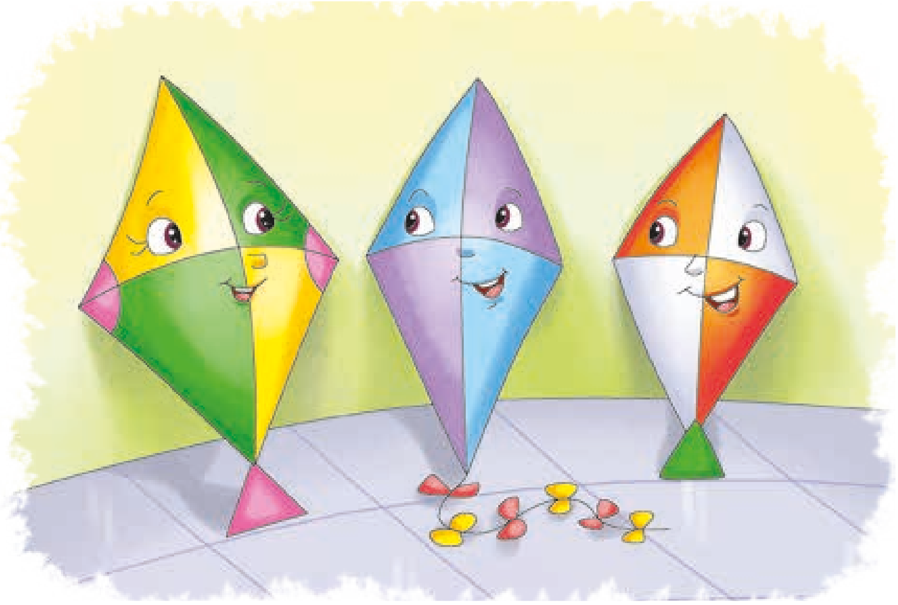

July 2023 work 18 7/20/2023 2:55:54 PM

हरी, नीली, हर रंग की पतंग आकाश में उड़ रही थी। कुछ बच्चे गुब्बारे भी उड़ा रहे थे। कई बच्चों ने अपनी पतंगे क्या खूब सजाई हुई थीं। तो कई बच्चों ने अपनी पतंगों में लम्बी पूँछ लगाकर उन्हें और भी आकर्षित बनाया था।

कई लोगों ने डीजे भी लगाया हुआ था। गाने सुनते–सुनते पतंग उड़ाने का आनंद ही कुछ और था तो कई लोग छत पर नाश्ता, जलेबी, गाजर और तिल के लड्डू खाने का आनंद ले रहे थे।

चारों ओर माहौल बहुत अच्छा था। लेकिन कुछ ही पल में माहौल बदल गया। जब फरफर 'चाइनीज धागे' से जुड़कर उड़ने लगी तो अन्य पतंगों की चिंता बढ़ गई। उन्हें यह चिंता सता रही थी कि फरफर की जिद्द के कारण कहीं कोई दुर्घटना न घट जाए।

अन्य पतंगे तो सामान्य सूती के धागे के साथ ही उड़ रही थीं। वे एक–दूसरे से निर्दोष भाव से पेच लड़ाकर पतंगोत्सव का मजा ले रही थीं। मगर फरफर ने तो एक के बाद एक सभी पतंगे काटना शुरू कर दिया। मानो उसके पास चाइनीज धागे के रूप में कैंची ही थी। उसे तो बस, विजेता ही साबित होना था।

जिनकी पतंगे कट रही थीं वे बच्चे उदास होने लगे। ज्यादा छोटे बच्चे तो रोने ही लग गए। वे दूसरी पतंग उड़ाते तो वह पतंग भी फरफर अपने तेज चाइनीज धागे से चुटकी में काट लेती थी। और जोर–जोर से हँसने लगती।

अन्य पतंगे काटने के चक्कर में फरफर ने कई पंछियों के पंख भी काट लिए। कई नन्हीं चिड़िया तो आसमान से सीधे नीचे जमीन की ओर गिरने लगी। कुछ तो बेचारी मर भी गई।

पंछियों की ऐसी हालत देखकर उड़ते बादल ने फरफर को समझाया कि ''फरफर, तुम ये ठीक नहीं कर रही हो। इन पंछियों ने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है? हमें यह त्योहार निर्दोष भाव से मनाना चाहिए। इस तरह अन्य जीवों को नुकसान पहुँचाकर कभी भी त्योहार का आनंद नहीं लिया जा सकता।''

July 2023 work 19 7/20/2023 2:55:55 PM

फरफर ने उसे गुस्साया और कहा, ''बादल, तुम अपना काम करो। मुझे आज विजेता बनने से कोई नहीं रोक सकता।''

सभी पतंगे निराश हो गईं। दूसरी ओर सभी बच्चे भी उदास होने लगे क्योंकि लगातार उनकी पतंगे कट जो रही थीं। फरफर की जिद्द से फिर दुर्घटना तो घटनी ही थी।

हुआ यूं कि एक नन्हे बच्चे ने चाँद वाली सुन्दर पतंग उड़ाई तो फरफर की नजर उस पर पड़ी। उसने सोचा, ''इस चाँद वाली पतंग को तो आज मैं काटकर ही रहूँगी। कल अपनी सुन्दरता पर बड़ी इतरा रही थी।''

वह तेजी से दाएं ओर मुड़ी और तेज हवा में सर... सर... जाती हुई चाँद वाली पतंग को काटने के लिए तैयार हुई। मगर तेज हवा का रुख बदला और फरफर औंधे मुँह नीचे की ओर आने लगी।

फरफर बहुत नीचे आ गई तो उसे ऊपर की ओर करने के लिए बच्चे ने प्रयत्न किया। लेकिन फरफर से जुड़ा चाइनीज धागा एक–दूसरे बच्चे के गले में फंस गया।

सामान्य सूती धागा होता तो बच्चा उसे खींचकर तोड़ देता और उसे कुछ नुकसान न पहुँचता। मगर चाइनीज धागा होने के कारण एक बच्चे ने जैसे ही फरफर को खींचना शुरू किया ... वैसे ही दूसरे बच्चे का गला कट गया। वह दर्द के मारे चिल्लाने लगा।

बच्चे के चिल्लाने की आवाज सुनकर सभी पतंगों की सांसे अटक गईं। आसपास के सभी लोग इकट्ठा हो गए। उस बच्चे के पिताजी दौड़ते हुए आए। उन्होंने देखा कि चाइनीज धागा बच्चे के गले में बुरी तरह फंस हुआ था और गले का भाग काफी कट गया था। खून बहने के कारण उसका बेटा बेहोश हो गया। उसे तुरन्त अस्पताल ले जाया गया।

अब तक विजेता बनने का सपना देख रही फरफर भी पलभर स्तब्ध रह गई। बच्चे की गंभीर हालत देखने के बाद उसे अपनी गलती का अहसास हुआ। बच्चे का

July 2023 work 20 7/20/2023 2:55:56 PM

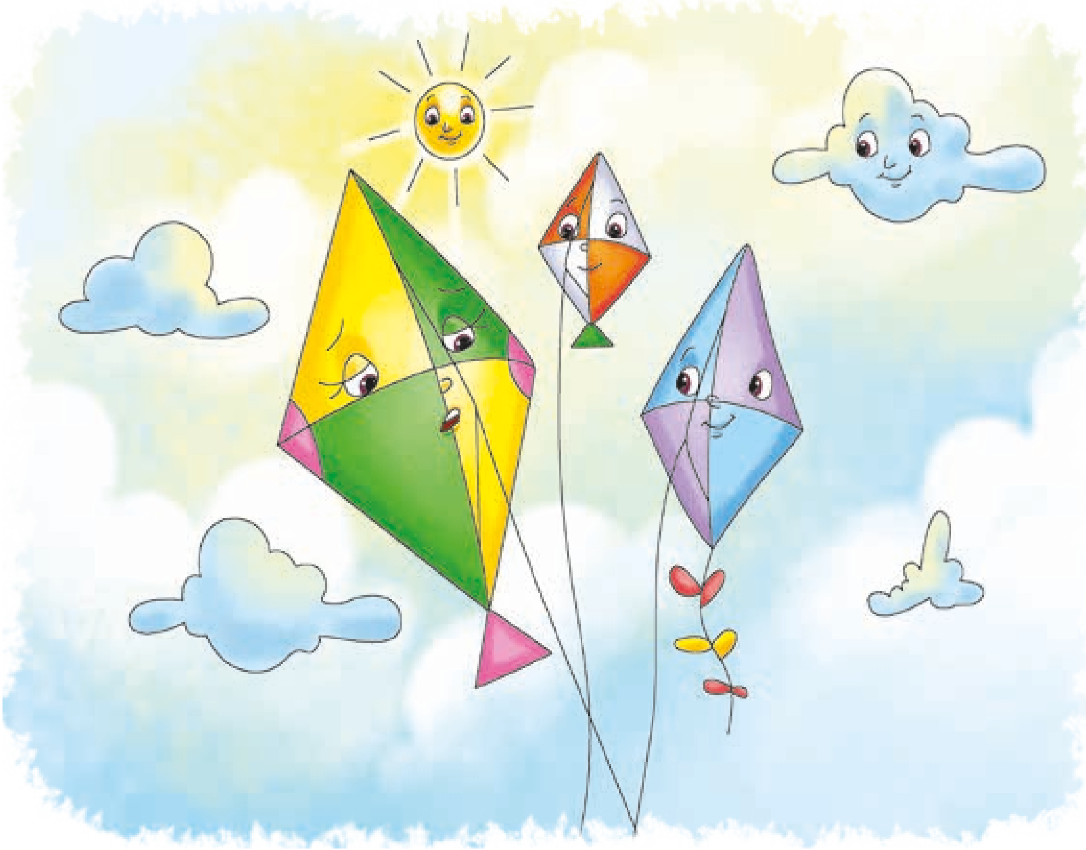

सही समय पर इलाज होने के कारण वह बच गया था।

यह देख बादल ने फरफर को समझाते हुए कहा, ''देखा, फरफर? तुम्हारी जिद्द के कारण एक बच्चे की जान जाते–जाते बच गई। चाइनीज धागा न जाने कितनों की जान लेगा। इस पक्के धागे ने कई इन्सानों के गले काट लिए हैं तो कई लोगों की सांसों की नस कट चुकी है। इस धागे से बच्चों की उंगलियों में गहरे घाव तक हो जाते हैं। इतना ही नहीं, बिजली का करंट लगने जैसी जानलेवा घटनाएं भी होती हैं।''

सूती धागे वाली एक फिरकी बोली, ''बिल्कुल सही कहा। चाइनीज धागे के कारण निर्दोष पंछियों के पंख कट जाते हैं। कई पंछी इस धागे में फंसकर तड़प–तड़पकर मरते हैं। हमें हमेशा ऐसे धागे का त्याग करना चाहिए और साधारण सूती धागा ही इस्तेमाल करना चाहिए। सूती धागा किसी से टकराए तो टूट जाता है। इसलिए किसी को जान का गंभीर खतरा भी नहीं होता।''

फरफर की आँखों में आंसू छलकने लगे। उसने सबसे माफी मांगते हुए कहा, ''मुझे माफ कर दो, दोस्तों! मुझे ऐसा नहीं करना चाहिए था। आज के बाद मैं कभी भी चाइनीज धागे का उपयोग नहीं करूँगी। मैं हमेशा के लिए चाइनीज धागे का त्याग करती हूँ। त्योहारों का सही मजा दूसरों को आनंद देने में है। दूसरों का आनंद छीनने में नहीं।''

फरफर में परिवर्तन आया देख सभी पतंगे खुश हो गईं। अब फरफर भी सामान्य सूती धागे से जुड़कर आकाश में उड़ने लगी। सभी पतंगों को सामान्य धागे के साथ उड़ते देख बच्चे व पंछी भी आनंदित हो गए क्योंकि अब उन्हें अपनी उँगलियां, गला या पंख कटने का कोई डर नहीं था। ◆

July 2023 work 21 7/20/2023 2:55:57 PM

अनमोल वचन

- ❖ ज्ञान उजाला है और अज्ञान अंधकार।
- ❖ मानव, प्रभु की उत्तम रचना है। इसका रूतबा बनाये रखना है।
- ❖ चरित्र की सम्पत्ति सारी दुनिया की दौलत से बढ़कर है।
- ❖ आज पढ़ना सब जानते हैं, मगर पढ़ना क्या चाहिए, यह कोई नहीं जानता।
- ❖ लगन के बिना किसी में भी महान प्रतिभा पैदा नहीं हो सकती।
- ❖ क्रियाशीलता ही ज्ञान प्राप्ति का एक मात्र मार्ग है।
- ❖ अहंकारी मनुष्य में न ज्ञान टिक सकता है और न वह दूसरों से सम्मान पाता है।
- ❖ एक मात्र वस्तु, जो हमें पशु से भिन्न करती है। वह है सही और गलत के मध्य भेद करने की क्षमता, जो हम सभी में समान रूप से विद्यमान है।
- ❖ सत्गुरु की शरण में आने से कठोर से कठोर हृदय वाला इन्सान भी शान्त हो जाता है।
- ❖ जो संयमित और मर्यादापूर्ण जीवन बिताते हुए सही रास्ते पर चलता है, वह कभी कष्ट में नहीं रहता।

– निरंकारी दर्शन

- ❖ भलाई भी उतनी देर तक नहीं मिलती जितनी देर तक हम भलाई को अहसान समझते हैं।
- ❖ सत्संग से जुडा हुआ मनुष्य तमाम दुनियावी प्रभावों से बचा रहता है।

– एच. एस. चावला जी

- ❖ भगवान का आश्रय ले लेने वाले को किसी दूसरे के आश्रय की आवश्यकता नहीं रहती।
- ❖ किसी के गुणों की प्रशंसा में अपना वक्त फिजूल न गवाओ उसके गुणों को अपनाने का प्रयास करो।

– कार्ल मार्क्स

- ❖ जब तक आप न चाहें तब तक आपको कोई भी ईर्ष्यालु, क्रोधी, प्रतिशोधी या लालची नहीं बना सकता है।

– नेपोलियन हिल

- ❖ जैसे मछली को पानी प्रिय लगता है, लोभी को धन और माता को अपना बालक प्रिय लगता है, वैसे ही भक्त को ईश्वर प्रिय लगता है।

– सन्त कबीरदास जी

- ❖ विद्या का अभ्यास नहीं करने से यह विष की तरह विनाशक बन जाती है।
- ❖ आलस्य करने से प्राप्त किया गया ज्ञान भी शीघ्र ही नष्ट हो जाता है।
- ❖ जननी और जन्मभूमि स्वर्ग से भी बढ़कर है।
- ❖ सफलता का एक ही मंत्र– पक्का इरादा, दूरदृष्टि, कड़ी मेहनत और अनुशासन।

– अज्ञात

संकलनकर्ता : भावना

July 2023 work 22 7/20/2023 2:55:57 PM

बरगद की मौत

बालकथा : अंकुश्री

vkज मोनू बहुत उदास था। सुबह से उसने कुछ खाया भी नहीं था। मोनू की माँ उसकी उदासी देखकर चिंतित थी।

पूछने पर मोनू ने बताया, ''कल से आंगन में एक भी चिड़िया नहीं आई है। न गौरैया आई है, न मैना ही। कौवा भी नहीं आया है। कभी–कभी गिलहरी आ जाया करती थी। लगता है, वह भी रूठ गयी है। वह भी नहीं आयी है।''

रविवार की छुट्टी थी। मोनू के पिता घर में थे। वे माँ–बेटे की बातचीत सुन रहे थे। घर से निकलकर आंगन में आ गये।

''अब चिड़ियाँ कभी नहीं आयेंगी।'' मोनू के पिता ने कहा, ''अब गिलहरी भी शायद दिखाई नहीं दे।''

''मगर क्यों?'' मोनू ने पूछा, ''पापा, आखिर वे मेरे आंगन में क्यों नहीं आयेंगे?''

मोनू के घर के बगल में बरगद का एक पेड़ था। बड़ा और बूढ़ा–सा वह पेड़ दूर–दराज तक पहचाना जाता था। उस विशाल पेड़ पर अनेक चिड़ियों का बसेरा था। गौरैया, मैना तो रहती ही थी, वहीं कौए और बगुले भी रहा करते थे। वह बरगद, चील और गिद्ध जैसे बड़े पक्षियों का बसेरा था ही, गिलहरियाँ

July 2023 work 23 7/20/2023 2:55:58 PM

भी उस पर रहती थीं। बड़ा–सा वह बरगद छोटे–बड़े अनेक कीट–पतंगों का घर बना हुआ था।

कीट, पतंगों, पशु–पक्षियों के साथ ही वह बूढ़ा बरगद आदमी के लिये भी बड़ा उपयोगी था। पेड़ के नीचे एक चबूतरा बना हुआ था। तपती दोपहरी हो या बारिश की बौछार वहाँ लोग ठहरकर क्षणभर विश्राम करके ही आगे बढ़ते थे।

''एक दिन बेचारे उस बरगद पर किसी की गिद्ध दृष्टि पड़ गयी। कुछ रुपये के लालच में बरगद को जिंदा ही बेच दिया गया।'' मोनू के पापा ने बताया, ''जिसने उस बरगद को खरीदा, उसे बरगद की हरियाली से कोई मतलब नहीं था, न उसे बरगद से मिलने वाली शुद्ध हवा या घनी छाया से ही मतलब था।''

''तो फिर उसे किस चीज से मतलब था?'' मोनू ने पूछा।

''सिर्फ लकड़ी से।'' पिता ने आगे बताया, ''मोनू! उसी आदमी ने बरगद को कटवा दिया है।''

मोनू दौड़कर कटे हुए बरगद के पास चला गया। बेचारा बरगद जमीन पर धाराशायी पड़ा था। कुछ मजदूर उस पर जोर–जोर से कुल्हाड़ी मार रहे थे। कुल्हाड़ी की चोट जहाँ पड़ रही थी, वहाँ से उजला–उजला दूध निकल रहा था। गिरने से पेड़ को जहाँ–जहाँ चोट लगी थी, वहाँ–वहाँ से दूध टपक रहा था। बरगद को देखकर लग रहा था कि कोई विशाल, बूढ़ा व्यक्ति घायल होकर गिर पड़ा हो, उसकी देह से जहाँ–तहाँ से खून टपक रहा हो। मोनू को लगा कि बरगद कराह रहा है।

बरगद के कट जाने से उस पर रहने वाले प्राणी बहुत दुखी थे। मोनू वहाँ अधिक देर तक खड़ा नहीं रह सका। उदास मन से वह घर आ गया। बरगद के कट जाने से वह बहुत दुखी था। एक प्रश्न उसके दिमाग में लगातार घूम रहा था कि कोई वृक्ष क्यों काटता है? यही प्रश्न उसने पिता से पूछा।

''वृक्षों से अनेक लाभ हैं। जलावन, लकड़ी, चारा, फल, फूल, बीज आदि वृक्षों से ही मिलते हैं।'' पिता ने बताया, ''लेकिन वृक्षों को काट देने से हमें ये लाभ मिलने बंद हो जाते हैं। किसी वृक्ष को काटने से हमें सिर्फ एक बार ही उसका

July 2023 work 24 7/20/2023 2:55:59 PM

लाभ मिल पाता है और वह भी आधा–अधूरा। वृक्षों से हमारा वातावरण हरा–भरा बना रहता है। यह हवा को साफ–सुथरा भी बनाये रखता है। ये आँखों को हरियाली तो देते ही हैं साथ ही आर्थिक स्थिति को भी हरा–भरा करके ये परिवार–समाज में हरियाली ला देते हैं। ये हमारे पर्यावरण के महान रक्षक हैं।''

''तो हमें क्या करना चाहिए?'' मोनू की जिज्ञासा बढ़ती जा रही थी।

पापा ने उसे बताना शुरू किया।– ''अपनी आवश्यकता को पूरा करने के लिये हमें वृक्ष लगाना चाहिए। अपनी धरती पर अपना वन।'' पिता ने समझाया, ''बहुत सारे लोग अपनी धरती पर वृक्षारोपण कर रहे हैं। इससे वे जलावन, लकड़ी, बल्लियों, चारा, फल, तैलीय बीज आदि के लिये आत्मनिर्भर हो जाते हैं। कागज के कारखानों में भी वृक्षों की खपत होती है। चीड़, यूकेलिप्टस, बांस आदि के वृक्षारोपण से जल्दी ही नकद राशि मिल जाती है।''

मोनू ने पेड़ों के बारे में सुन रखा था। मगर पेड़ वन, वानिकी और पर्यावरण के बारे में उसे अधिक जानकारी नहीं थी। ''पापा! आज मुझे पेड़ और पर्यावरण के बारे में जानकर बहुत खुशी हुई।''

''किसी जानकारी से वास्तविक खुशी तब होती है, जब उसका लाभ उठाया जाये।'' पापा ने मोनू को बताया, ''तुम पेड़ और पर्यावरण से मिलने वाले लाभ के बारे में जान चुके। अब तुम भी इसका लाभ उठाओ।''

मोनू ने संकल्प किया, ''जरूर! मैं इस बरसात में कम से कम दस पौधे अवश्य लगाऊँगा और पर्यावरण को बचाने में मदद करूंगा।''

विद्यालय और गाँव के अनेक बच्चों ने मोनू की देखा–देखी पौधे लगाने शुरू कर दिये। ◆

वैज्ञानिक तथ्य

❖ बादलों की चमक गर्जनें के पहले दिखाई देती है क्योंकि प्रकाश की चाल, ध्वनि की चाल से अधिक होती है।

❖ पत्थर को हवा के बजाए पानी में उठाना आसान होता है क्योंकि पानी में पत्थर पर ऊपर की ओर उत्प्लावन बल कार्य करता है।

❖ खाना खाने के बाद हमें नींद आती है क्योंकि शरीर का बहुत सारा रक्त पाचन क्रिया हेतु पेट में चला जाता है और मस्तिष्क में रक्त की कमी होने से हमें नींद आती है।

❖ यदि हम जल व शहद को कीप में अलग–अलग डालें तो जल बहुत शीघ्र कीप के छेद में से होकर बाहर निकल जाता है परन्तु शहद बहुत देर में निकल पाता है, इसका कारण यह है कि शहद में जल की अपेक्षा अधिक श्यानता (गाढ़ापन) होती है।

प्रस्तुति : रामकुमार शर्मा

July 2023 work 25 7/20/2023 2:56:00 PM

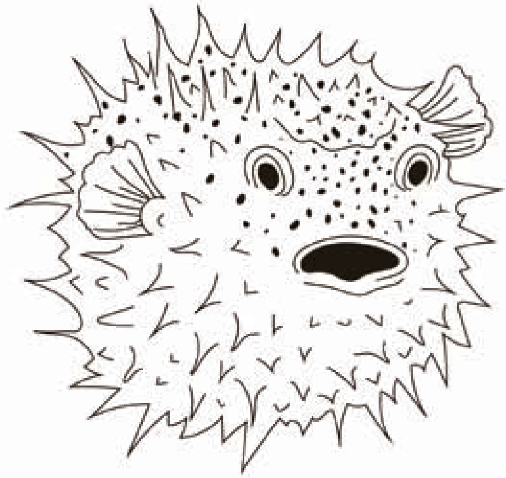

विश्व की सर्वाधिक विषैली मछली

सिनेसिया हॉरिडा

लेख : परशुराम शुक्ल

सामान्यतया सभी मछलियां विषहीन होती हैं किन्तु हिन्द एवं प्रशान्त महासागर के ऊष्णकटिबन्धीय जल में पायी जाने वाली पत्थर मछली (स्टोनफिश) विषैली होती है। इस मछली का रंग–रूप इस प्रकार का होता है कि जब यह सागर तट पर या रेत में आधी धंसी पड़ी होती है तो ऐसा लगता है मानो कोई समुद्री पत्थर पड़ा हो। इसलिए इसे पत्थर मछली या स्टोनफिश कहते हैं।

पत्थर मछली की तीन अत्यन्त विषैली उपजातियां पायी जाती हैं। इनमें सिनेसिया हॉरिडा का विष सर्वाधिक घातक होता है। यह विश्व की सबसे अधिक जहरीली मछली है। सिनेसिया हॉरिडा ऑस्ट्रेलिया और दक्षिणी अफ्रीका के सागर तटों पर बहुतायत से मिलती है। इसे मुख्य रूप से लाल सागर, पूर्वी अफ्रीका के सागर तटों और हिन्द महासागर से लेकर पश्चिमी ऑस्ट्रेलिया और 'क्वीन्स लैंड' के उत्तरी सागर तटों पर बहुतायत से देखा जा सकता है। यह उथले पानी में और सागर की तलहटी में रहने वाली मछली है। सिनेसिया हॉरिडा ऐसे स्थानों पर रहना अधिक पसन्द करती है जिनकी तलहटी मूंगे की चट्टानों वाली हो। सिनेसिया हॉरिडा के शरीर का रंग सागर की तलहटी में पायी जाने वाली रेत, रंग–बिरंगी समुद्री चट्टानों और पत्थरों जैसा होता है। कभी–कभी यह समुद्री काई जैसे रंग की भी दिखाई देती है। इसके शरीर में आसपास के पर्यावरण के अनुसार अपना रंग बदलने की अद्भुत क्षमता होती है। यह मछली मूंगे की चट्टान से चिपकी हुई समुद्री चट्टानों अथवा पत्थरों के मध्य किसी बड़ी चट्टान के निकट या सागर की तलहटी में आधी रेत में दबी हुई शान्त पड़ी हो तो इसका रंग आसपास के पर्यावरण से इतना घुल–मिल जाता है कि यह दिखाई ही नहीं देती और दूर से ऐसा लगता है मानों कोई रंग–बिरंगा पत्थर पड़ा हो।

सिनेसिया हॉरिडा एक बदसूरत मछली है। यह दूर से देखने पर भयानक और डरावनी लगती है। सिनेसिया हॉरिडा की लम्बाई लगभग 30 से 40 सेंटीमीटर के मध्य होती है। इसका सिर चौड़ा और चपटा होता है तथा सिर के पीछे से शरीर का भाग

July 2023 work 26 7/20/2023 2:56:01 PM

धीरे–धीरे पतला होता जाता है। इसके शरीर के अन्त में फिन्स होते हैं जो इसे तैरने में सहयोग देते हैं। इसका मुँह बड़ा और चौड़ा होता है तथा दाँत मजबूत और नुकीले होते हैं। प्रायः अधिकांश मछलियों का शरीर शल्कों से ढका होता है किन्तु सिनेसिया हॉरिडा के शरीर पर शल्क नहीं होते। इसके ऊपर के फिन्स बड़े, चौड़े और कांटेदार होते हैं। सिनेसिया हॉरिडा की पीठ पर डोरसलफिन्स होते हैं जिनमें तेरह कांटे होते हैं। इसके शरीर पर पाये जाने वाले प्रत्येक कांटे के ऊपरी सिरे पर दो–दो विषग्रंथियां होती हैं। काँटों पर दबाव पड़ते ही विषग्रंथियों का मुँह खुल जाता है और विष बाहर आ जाता है। इसकी पीठ के काँटों का विष अधिक घातक और विषैला होता है।

सामान्यतया सिनेसिया हॉरिडा सागर की तलहटी में शान्त पड़ी रहती है तथा शत्रुओं के निकट पहुँचने पर भी न तो भागती है और न ही कोई हलचल करती है किन्तु शत्रु के बहुत अधिक निकट पहुँच जाने पर यह अपने काँटे खड़े कर लेती है और सावधान हो जाती है।

सिनेसिया हॉरिडा एक मांसाहारी मछली है किन्तु यह शिकार के लिए अपने विषैले कांटों का उपयोग नहीं करती और न ही शिकार करने के लिए अपने स्थान से दूर जाती है। यह अपने स्थान पर शान्त पड़ी रहकर शिकार की प्रतीक्षा करती है और जैसे ही इसका शिकार निकट आता है यह पलक झपकते ही झपट कर उसे पकड़ लेती है और निगल जाती है।

सिनेसिया हॉरिडा एक घातक, विषैली मछली है। यह पानी के बाहर भी दस घंटे तक जीवित रह सकती है और मर जाने के बाद भी इसके काँटों का विष समाप्त नहीं होता। यही कारण है कि हिन्द महासागर के मछुआरे मछलियां पकड़ते समय इससे बहुत सावधान रहते हैं। ◆

आओ जानें इन्द्रधनुष के बारे में

बरसात के दिनों में बच्चों तुम अक्सर आकाश में एक बड़ी अर्द्ध गोलाकार या पूर्ण गोलाकार पट्टी बनती देखी होगी। सात रंगों की इस पट्टी को ही इन्द्रधनुष कहते हैं। प्रसिद्ध वैज्ञानिक सर आइजैक न्यूटन ने ही सर्वप्रथम बताया था कि दरअसल सूर्य के प्रकाश में सात रंगों का मिश्रण होता है जो आपस में मिलकर हमें सफेद रंग का दिखाई देता है। उन्होंने पहली बार सन् 1665 में प्रिज्म का प्रयोग कर प्रयोगशाला के अन्दर सूरज के प्रकाश से इन्द्रधनुष बनाकर दिखाया। प्रिज्म काँच का त्रिआयामी (थ्री डी) त्रिभुज होता है। चाहो तो तुम भी किसी बड़े की सहायता लेकर घर पर भी इसका प्रयोग कर सकते हो।

वर्षा के बाद वायुमंडल जल की छोटी–छोटी बूंदों से भीग जाता है। जब सूरज का प्रकाश अपने मूल सात रंगों में (बैंगनी, जामुनी, नीले, हरे, पीले, नारंगी और लाल) टूट जाता है तो जल की बूंदों से टकराने पर सात रंगों की पट्टी आकाश में अद्भुत छटा बिखेरती है। सूर्य का आकार गोल होने के कारण ही इन्द्रधनुष भी गोल दिखाई देता है। ◆

July 2023 work 27 7/20/2023 2:56:01 PM

फूल भी खिलते हैं कैक्टस में

लेख : ईलू रानी

कैक्टस रेगिस्तान और जंगलों में उगने वाला पौधा है, इसकी दुनियाभर में 1500 से भी अधिक प्रजातियाँ मौजूद हैं। इसकी 95 प्रतिशत प्रजातियों पर काँटे होते हैं। भिन्न–भिन्न प्रजातियों पर ये काँटे आधा इंच से लेकर 4–5 फुट तक लम्बे भी होते हैं। कुदरत का यह एक ऐसा पौधा है। जो हर मौसम में बिना खाद पानी के भी सदा मुस्कुराता और हरा–भरा दिखाई देता है।

ग्रीक शब्द 'काक्टौस' से बिगड़कर 'कैक्टस' शब्द बना है। ग्रीक भाषा में 'काक्टौस' का अर्थ काँटेदार पौधा होता है। लेकिन कैक्टस की कुछ किस्में ऐसी भी होती हैं जिनमें काँटे नहीं होते।

कैक्टस सिर्फ रेत में ही फलता–फलूता है यह आम धारणा है, लेकिन सच्चाई तो यह है कि इसे भी अन्य पौधों के समान सही प्रकार के पोषण की जरूरत पड़ती है। हाँ, अपने अन्दर पानी सोखकर रखने की क्षमता के कारण इसमें बार–बार पानी नहीं डालना पड़ता।

कैक्टस को मोटे तौर पर तीन श्रेणियों में रख सकते हैं। यह है 'ऑपेसिया', 'मामिल्लारी' तथा 'रॉड कैक्टस'। नागफन के समान चपटे तने वाले कैक्टस 'ऑपेसिया' या 'नागफनी' कहलाते हैं। गेंद की तरह के तने वाले कैक्टस 'मामिल्लारी' कहलाते हैं तथा डंडे की तरह गोल लम्बे तने के कैक्टस 'रॉड कैक्टस' कहलाते हैं।

ऐसा नहीं है कि कैक्टस सिर्फ काँटों वाला पौधा ही है, इसकी कई किस्मों में सुन्दर रंग–बिरंगे फूल भी खिलते हैं। ऑपेसिया कोक्सीनीली फेरा तथा फाप्लो–कैक्टस में लाल रंग के आकर्षक फूल उगते हैं। ऑपेसिया पोलिएन्था तथा नोटो कैक्टस में पीले रंग के सुन्दर फूल लगते हैं।

कैक्टस लगाने के लिए इसका 4–5 इंच का तना काटकर 3–4 दिन हवा लगने देनी चाहिए। उसके बाद जमीन या गमले में लगाकर उसमें थोड़ा–सा पानी दे दे। कुछ दिनों बाद इसमें जड़ फूट आएगी। इस पौधे की खूबी यह है कि इसे खुले आंगन, बरामदे, चौंक इत्यादि में लगाने के अलावा घर के अन्दर कमरों में भी रखा जा सकता है। इसमें बार–बार पानी नहीं डालना पड़ता। अतः इसकी मिट्टी में मच्छर होने का खतरा भी नहीं रहता।

अफ्रीका के जंगलों में पाये जाने वाले कैक्टस के पौधों की लम्बाई 30 फुट तक होती है। इनमें 4–5 फुट लम्बे नुकीले काँटे नीचे ऊपर तक लगे रहते हैं। देखने में ये पेड़ बड़े अजूबे होते हैं।

दक्षिण अमेरिका में 8–10 फुट लम्बे कैक्टस के ऐसे पौधे हैं, जिनका तना खून की तरह लाल रहता है। इस तने से प्राकृतिक लाल रंग का निर्माण भी किया जाता है। ◆

July 2023 work 28 7/20/2023 2:56:01 PM

सफेद बादल और लापरवाह बंटी

कहानी : डॉ. घमंडीलाल अग्रवाल

रुई जैसे सफेद बादल ने खिड़की में झाँककर`खा। बंटी अपने पलंग पर गुमसुम बैठा हुआ था। बादल को अच्छा नहीं लगा। उसने बंटी को पुकारा, 'उदास क्यों हो बंटी?'

बंटी ने गर्दन घुमाकर चारों ओर देखा लेकिन वहाँ तो कोई भी नहीं था। बादल ने दुबारा आवाज़ दी, 'इधर देखो, खिड़की के बाहर ऊपर की तरफ। मैं हूँ बादल, तुम्हारा दोस्त।'

अबकी बार बंटी ने खिड़की से झाँककर आसमान की ओर निहारा। एक सफेद बादल मुस्कुरा रहा था। बंटी ने बादल से 'गुड मॉर्निंग' की।

'मॉर्निंग।' बादल ने पलटकर जवाब दिया। तभी बादल के माथे पर चिंता की लकीरें उभर आयीं। बंटी सोच में पड़ गया। उसने बादल से पूछा, 'तुम ठीक तो हो न?'

'हाँ। लेकिन एक दुख मेरे तन को खोखला किए जा रहा है।' बादल ने जवाब दिया।

'कौन–सा दुख?' बंटी ने उत्सुकता से पूछा।

'तुम्हारी लापरवाही का दुख। क्या तुम्हें याद है कि कल तुमने क्या–क्या किया था? दादा जी का चश्मा उठाकर न जाने कहाँ रख दिया तुमने, जिसकी वजह से उन्हें अच्छी–खासी परेशानी का सामना करना पड़ा। फिर, माँ की साड़ी को पुराने कपड़ों के ढेर में छिपा दिया। और हाँ, दीदी की नोटबुक भी तो बुक शेल्फ से निकालकर बेडरूम में रख दी। दादा जी, मम्मी और दीदी तीनों के तीनों मन मसोसकर रह गए थे सचमुच तुम्हारी इस लापरवाही के कारण।' बादल बोला।

July 2023 work 29 7/20/2023 2:56:02 PM

'तो क्या करूँ मैं? मुझे सजा दे दो।' बंटी रुआँसे स्वर में बोला।

'सजा नहीं अपितु सुधार का अवसर देता हूँ तुम्हें। साथ ही साथ मैं तुम्हारी हरकतों पर प्रतिदिन निगरानी भी रखूँगा।' बादल ने चेतावनी भरे लहजे में अपनी बात कह डाली।

'ठीक है।' बंटी ने हामी भरी। फिर बंटी ने बादल से कुछ जानकारियां माँगी।

'तुम्हारे और कौन–कौन से नाम हैं बादल जी?' बंटी ने पूछा।

'मेरे अन्य नामों में प्रमुख हैं– मेघ, घन, जलधर, जलद, वारिद, नीरद, पयोद, अंबुद आदि।' बादल ने जवाब दिया।

'तुम्हारा निर्माण कैसे होता है?' बंटी ने अगला सवाल किया।

जवाब में बादल बोला, ' जब नदी, तालाब, झील और समुद्र का पानी सूरज की गर्मी से भाप बनकर ऊपर उठता है तब मेरा निर्माण होता है।'

यह सुनकर बंटी का हृदय प्रसन्न हुआ। लेकिन कुछ जिज्ञासाएँ तो अभी भी उसके मन में मौजूद थीं।

बंटी ने पुनः पूछा, 'बादल जी, तुम्हारे कितने रूप हैं?'

बादल हँसा। फिर बोला, 'भई, मैं तो बहुरूपिया हूँ। धरातल से ऊँचाई के आधार पर मेरे चार वर्ग निर्धारित किए गए हैं– उच्च मेघ, मध्य मेघ, निम्न मेघ और ऊर्ध्वाधर विकास वाले मेघ। उच्च मेघ (पक्षाभ, पक्षाभ स्तरी और पक्षाभ कपासी) की धरातल से औसत ऊँचाई 5 से 13 किलोमीटर होती है। जबकि मध्य मेघ (स्तरी, कपासी) की 2 से 7 किलोमीटर। वहीं निम्न मेघ (स्तरी कपासी, स्तरी और वर्षा स्तरी) की धरातल से औसत ऊँचाई 0 से 2 किलोमीटर और ऊर्ध्वाधर विकास वाले मेघ (कपासी, कपासी वर्षी) की आधार से शीर्ष तक की ऊँचाई 18 किलोमीटर रहती है।'

'वाह, बहुत खूब! पर मेरे मन में एक उत्सुक्ता और है?' बंटी ने बादल से कहा।

July 2023 work 30 7/20/2023 2:56:03 PM

'कौन–सी?' बादल बोला।

'तुम नीचे धरती पर क्यों नहीं गिरते हो?' बंटी ने सवाल किया।

'बादल बोला, 'हमारे शरीर में पानी के वाष्पीकरण के कारण गर्म हवा भर जाती है जिससे हम जमीन पर न गिरकर हवा में ही उड़ते रहते हैं। वर्षा के दौरान हम नीचे की ओर जरूर आते हैं किन्तु बरसने के बाद पुनः ऊपर उठ जाते हैं।'

'और वर्षा लाने में किस बादल की भूमिका रहती है? यह भी तो बताओ।' बंटी ने पूछा।

'स्तरी बादल ही भूमि पर वर्षा तथा ओले गिराते हैं।' बादल ने सफाई दी। इतना कहकर बादल ओझल हो गया।

बंटी बिस्तर से उठा। उसने मन में ठानी कि आज से वह लापरवाही छोड़ देगा और एक नेक लड़का बनकर दिखाएगा। वह दादा जी के पास पहुँचा और उनके चरण छूकर आशीर्वाद लिया।

दादा जी सैर को जाने वाले थे। बंटी भी दादा जी के साथ चल दिया। वे आगे बढ़े। खेल के मैदान में कुछ बच्चे बड़ी सावधानी से खेल रहे थे बिना किसी लापरवाही के खेल का आनंद लेते हुए। बंटी को उनसे सबक मिला। वे पार्क में भी गए। पार्क में माली पूरे मनोयोग से पौधों को पानी दे रहा था। एक घंटे के बाद बंटी दादा जी के साथ घर वापस आ गया।

July 2023 work 31 7/20/2023 2:56:04 PM

आज माँ ने बंटी को कुछ काम बताए तो बंटी ने सावधानीपूर्वक वे सारे काम कर दिये। बंटी ने माँ को आश्वस्त किया कि अब वह सुधर गया है और लापरवाही का दामन छोड़ दिया है। उसने सावधानीपूर्वक दादा जी को चाय–नाश्ता कराकर कप–प्लेट उठाएं। दीदी को भी उसने बिना क्षति पहुँचाए सहयोग दिया।

बंटी विद्यालय में भी एक आज्ञाकारी बच्चे की तरह पेश आया। न तो उसने किसी सहपाठी की नोटबुक गायब की और न ही खेलते समय टीम को हारने दिया। टीचर व अन्य विद्यार्थी यह देखकर हैरान थे। शाम को बंटी ने अपना होमवर्क भी ठीक ढंग से पूरा किया। खाना खाया और सो भी गया।

अगली सुबह बंटी प्रसन्न मन से सोकर उठा। उसने सारे काम सावधानीपूर्वक निपटाए।

लगभग एक सप्ताह गुजर चला था। बंटी रोज सुबह सफेद बादल की राह देखता। आज सफेद बादल उससे मिलने आखिर आ ही गया। मुस्कुराते हुए बंटी से बोला, 'वाह दोस्त! तुमने जो कहा था, करके दिखा दिया है। अब तुम एक जिम्मेदार व नेक बच्चे बन गए हो। देखो तो मेरे साथ कौन है?'

'अरे, यह तो काला बादल है, पानी से भरा हुआ। क्या आज बारिश करने वाले हो?' बंटी ने पूछा।

फिर क्या था, झमाझम बारिश शुरू हो गयी। बंटी घर से बाहर निकला और देर तक पानी का आनंद उठाता रहा। बादल भी मन ही मन खुश था।

बंटी ने बादल का मन खुश कर दिया था और बादल ने बंटी का।

बादल ने मित्रता को खूब निभाया और बंटी को कभी राह से भटकने नहीं दिया। मम्मी भी सफेद बादल के इस उपकार पर उसका आभार व्यक्त करते नहीं थक रही थी। ◆

July 2023 work 32 7/20/2023 2:56:05 PM

बुलबुल

बाल कविता : मीनू सिंह

कितनी प्यारी बुलबुल लगती,
सिर पर उसके जटा है जचती।

गोल–गोल हैं आँखें इसकी,
लाल ग्रीवा सबको छलती।

रोज–रोज मेरे घर आती,
नन्हें–नन्हें पंख हिलाती।

नित नये करतब दिखलाकर,
बाल–बृन्द, सबके मन भाती।

उड़ती रहती नील गगन में,
दाना खाने भू पर आती।

चीं–चीं का संगीत सुनाकर,
फुर्र–फुर्र करके है उड़ जाती।

गौरैया

बाल कविता : महेन्द्र कुमार

आंगन में आती गौरैया,
मन लुभा जाती गौरैया।

दाना–दुनका चोंच में भर के,
झटपट उड़ जाती गौरैया।

धूल में जब वो खूब नहाती,
बरखा–सन्देश लाती गौरैया।

देख के मुख दर्पण में अपना,
खुद से लड़ जाती गौरैया।

कमरे के कोने में अक्सर,
नीड़ बना रहती गौरैया।

बिल्ली को आते देखे तो,
डरकर छुप जाती गौरैया।

चीं–चीं का शोर मचाकर,
हमें जगा जाती गौरैया।

July 2023 work 33 7/20/2023 2:56:06 PM

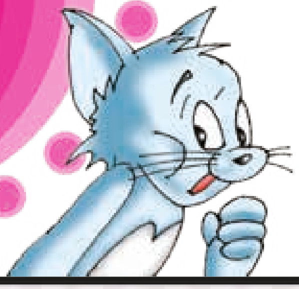

किट्टी

चित्रांकन एवं लेखन : अजय कालरा

July 2023 work 34 7/20/2023 2:56:11 PM

मैं मोंटी, मौली और चिंटू को भी फोन करके बुला लेती हूँ।
किट्टी, हम सब आ गए, अब बाहर चलें।
वाह! बारिश के इस खुशनुमा मौसम का मज़ा तो भीगने में ही है।
पर मुझे तो बारिश में भीगना बहुत अच्छा लगता है, मैं नहीं जाऊँगी।
हम ज्यादा देर बारिश में नहीं भीगेंगे वरना बीमार पड़ जाएंगे।

July 2023 work 36 7/20/2023 2:56:18 PM

July 2023 work 37 7/20/2023 2:56:19 PM

कभी न भूलो

❖ आत्म–विश्वास सरीखा दूसरा मित्र नहीं, आत्म–विश्वास ही भावी उन्नति की प्रथम सीढ़ी है।

– स्वामी विवेकानन्द

❖ अपनी आवश्यकताओं को सीमित कर लेना हमेशा सुखद होता है।

– शेक्सपीयर

❖ जिस प्रकार जो खेत उत्तम उपज देता है, वह उत्तम माना जाता है, ठीक इसी प्रकार उत्तम स्त्री–पुरुषों को जन्म देने वाला देश भी श्रेष्ठ होता है।

– विनायक दामोदर सावकर

❖ वही उन्नति कर सकता है जो स्वयं अपने को उपदेश देता है।

– स्वामी रामतीर्थ

❖ यह धरती ही हमारी कर्म भूमि है।

– मुंशी प्रेमचन्द

❖ बुराई के बारे में सोचना, बुराई करने से भी बुरा है।

– मनुस्मृति

❖ सही अवसर न मिलने पर योग्यता कोई मायने नहीं रखती है।

– नेपोलियन बोनापार्ट

❖ जो काम जितना नेकनीयत से किया जाएगा उतना ही बेहतर होगा।

– भगवान बुद्ध

❖ मैं बहानों में विश्वास नहीं करता। मैं जीवन की समस्याओं को सुलझाने के लिए कठिन परिश्रम को प्रमुख कारक मानता हूँ।

– जेम्स कैश पेनी

❖ साधारण दिखने वाले लोग ही दुनिया के सबसे अच्छे लोग होते हैं, यही वजह है कि भगवान ऐसे बहुत से लोगों का निर्माण करते हैं।

– अब्राहम लिंकन

❖ बुराई चाहे छोटी ही क्यों न हो उसको बिल्कुल भी अपने पास न आने दें क्योंकि अन्य बड़ी बुराईयां निश्चित रूप से उसके पीछे–पीछे आयेंगी।

– बाल्टासर ग्रेशियन

❖ आपका संघर्ष जितना अधिक होगा, आपकी जीत उतनी ही शानदार होगी।

– थॉमस पेन

❖ हम जिस चीज की तलाश कहीं और कर रहे होते हैं। हो सकता है कि वह हमारे आसपास ही हो।

– हार्वी कॉक्स

❖ शुरूआत करने के लिए महान होना आवश्यक नहीं है, परन्तु महान बनने के लिए शुरूआत करना अनिवार्य है।

– हेनरी डेविड थोरू

संकलनकर्ता : जगतार 'चमन'

July 2023 work 38 7/20/2023 2:56:20 PM

पावस ऋतु

कविता : रामअवध राम

घिर आये गगन में घन,
पावस की ऋतु आयी।
छम छम जल वृष्टि,
सोंधी महक उड़ाई।।

चपला चम–चम चमके,
उर में घन के घनके।
कभी जोर से बरसे जल,
कभी बरसे थम के।।

दिशि दिशि में धरती पर,
जल उज्ज्वल उज्ज्वल।
ऊपर से नीचे उतर,
बहता कुल–कुल, छल–छल।।

टर्र–टर्र टर्राते दादुर,
जल में धूम मचाते।
संग सारे ही जलचर,
खूब रूम मनाते।।

परिपूरित जल से हुए,
पोखर ताल–तलैया।
सरिता की अविरल धारा में,
दौड़ती जाये नैया।।

लहराई खेती बाड़ी,
कृषक हुआ प्रसन्न।
देख घटा कजरारी,
नाचे मयूर मगन।।

हरिमा युक्त हुए बाग वन,
झूम रही डाली–डाली।
श्यामा कूँके चातक गाये,
पावस ऋतु लगे भली।।

July 2023 work 39 7/20/2023 2:56:22 PM

कौए की समझदारी

बाल कहानी : सांकलचन्द पटेल

कल रविवार था। स्कूल में छुट्टी थी। रमेश बगीचे में बैठा पुस्तक पढ़ रहा था। बाग में फूल खिले थे और मीठी सुगंध आ रही थी। चिड़ियाँ चहक रही थीं, और एक पेड़ पर से दूसरे पेड़ पर उड़ा–उड़ी कर रही थीं।

रमेश ने देखा कि उसके सामने एक चिड़ा आया है और उसकी चोंच में रोटी का एक टुकड़ा है। चिड़ा रोटी के टुकड़े को तोड़ने की कोशिश कर रहा है। भरसक कोशिश कर रहा है, पर रोटी का टुकड़ा टूटता नहीं है; क्योंकि रोटी का टुकड़ा सूखा है और सख्त है। वह रोटी के टुकड़े को मोड़ने के लिए जमीन के साथ ठोकरें लगाता है परन्तु टुकड़ा टस से मस नहीं होता है। आखिर थककर रोटी के टुकड़े को वहीं छोड़कर चिड़ा फुर्र से उड़ जाता है।

इतने में एक मैना वहाँ आई। वह भी रोटी के टुकड़े को अपनी चोंच में लेकर खाने की कोशिश करती है, पर रोटी का टुकड़ा टूटता नहीं है। वह पत्थर पर जा बैठी और रोटी के टुकड़े को पत्थर के साथ रगड़ती है लेकिन रोटी का टुकड़ा टूटने का नाम नहीं लेता। उसे अचरज होता है– 'अरे भाई, कमाल है! यह तो रोटी का टुकड़ा है कि पत्थर है।'

अन्त में थक–हारकर वह भी उड़ जाती है।

July 2023 work 40 7/20/2023 2:56:23 PM

पेड़ पर बैठा एक कौआ यह सब देख रहा था। उड़कर वह पेड़ से नीचे आया, और रोटी के उस टुकड़े को देखने लगा, फिर टुकड़े को अपनी चोंच में ले लिया। फिर उसने टुकड़े को नोंचा, जमीन के साथ रगड़ा पर टुकड़ा न टूटा।

'अब?' वह स्वगत बोला।

कौए ने आसपास देखा। दूर पानी का एक घड़ा था। उड़ता हुआ वह घड़े के पास पहुँच गया। रोटी का टुकड़ा लेकर उसने उसे पानी में डुबोया। फिर देखा, टुकड़ा थोड़ा नरम हुआ था। यह देखकर उसका उत्साह बढ़ गया। उसने दुबारा रोटी के टुकड़े को पानी में भिगोया। अब रोटी का टुकड़ा रबड़ जैसा ढीला हो गया था। कौआ खुश हो रहा था। उसने तीसरी बार रोटी के टुकड़े को पानी में डुबोया। अब रोटी का टुकड़ा बिल्कुल नरम हो गया था। कौए ने टुकड़े को अपने पांव तले दबाया और चोंच से उसे कुतरकर खाने लगा। रोटी का टुकड़ा आसानी से टूट रहा था और कौआ मजे से उसे खा रहा था। टुकड़ा जब पूरा खत्म हो गया तब वह घड़े के पास गया और उसमें से पानी पिया। फिर आनंद से काँव... काँव करता उड़ गया।

रमेश अपने मन में कौए की समझदारी की तारीफ करता हुआ घर की ओर चल पड़ा।

घर आकर उसने कौए की यह कहानी अपनी छोटी बहन पिंकी को सुनाई। ◆

foKku&okrkZ

तीसरे का जवाब

विज्ञान की कक्षा में अध्यापक महोदय नहीं आए थे। आसपास बैठे दो लड़के आपस में बातचीत करने लगे। एक बोला, ''न्यूटन महान वैज्ञानिक था।''

''वह कैसे?'' दूसरे ने पूछा।

''उसने पेड़ से गिरते हुए सेब को देखकर एक बड़ा सिद्धान्त खोज निकाला– पृथ्वी में गुरुत्वाकर्षण शक्ति है।'' पहले ने जवाब दिया।

''भाप से उठते हुए ढक्कन को देखकर भाप की शक्ति से चलने वाला इंजन बना डालना और उसकी मदद से भविष्य में रेलगाड़ी चला देना। क्या तुम आसान समझते हो?'' दूसरे ने अपनी बात सुनायी।

''नहीं तो!'' पहले ने पूछा, ''किसने ऐसा किया है?''

''जेम्सवाट ने।'' प्रत्युत्तर में दूसरा झट बोला।

अब पहले ने उदास होकर कहा, ''यार एक हम लोग हैं कि रोज पेड़ से गिरते हुए फल और भाप से उठते हुए ''ढक्कन को देखते हैं। फिर भी कोई कमाल नहीं दिखा पाते। है न दुःख की बात?''

एक तीसरा लड़का बड़े ध्यान से दोनों की बातें सुन रहा था और उनके करीब आकर उसने तपाक से जवाब दिया, ''उदास क्यों होते हो। कोई दुःख की बात नहीं है। कैसे हम कुछ नहीं कर पाते हैं। पेड़ से गिरे हुए फल तो खा ही सकते हैं और जब जी मचलता है, मन होता है, रेलगाड़ी पर चढ़कर सफर का आनन्द भी खूब लेते हैं– है न खुशी की बात?'' ◆

प्रस्तुति : राधेलाल 'नवचक्र'

July 2023 work 41 7/20/2023 2:56:23 PM

सहज सलोना चीतल

– अनिता

चीतल हिरण परिवार का सबसे अधिक सुन्दर और आकर्षक सदस्य है। अंग्रेजी में इसे 'स्पोटेड डीयर' के नाम से पुकारा जाता है जबकि संस्कृत में इसके लिए 'पृषत' शब्द का उपयोग किया जाता है जिसका अर्थ है 'श्वेत बिन्दु'। चीतल एक प्राचीन प्राणी है। इसका उल्लेख वाल्मीकि रामायण तथा कालीदास रचित 'रघुवंश' तक में मिलता है।

यह खूबसूरत चौपाया केवल भारत तथा श्रीलंका के कुछ हिस्सों में ही पाया जाता है। एक वयस्क चीतल की ऊँचाई लगभग तीन फुट होती है। इसके शरीर का पिछला हिस्सा अगले हिस्से की अपेक्षा छोटा होता है। इसकी नाजुक और मुलायम खाल का रंग लालिमा लिए हुए भूरा होता है तथा उस पर बनी सफेद चित्तियां चीतल के सौन्दर्य में और भी अधिक वृद्धि कर देती हैं। मुँह का रंग गहरा तथा आकार हिरण की तरह होता है। चीतल के लम्बे लाल–भूरे रंग के सींग इसके व्यक्तित्व में चार–चाँद लगा देते हैं। इन सींगों की लम्बाई तीन फुट से अधिक तथा मोटाई पाँच इंच तक होती है। इसके सींग अन्य पशुओं के सींगों से सर्वथा अलग प्रकार के होते हैं। प्रत्येक सींग में तीन शाखाएं होती हैं। खूबसूरत सींगों का यह अनूठा तोहफा प्रकृति ने केवल नर चीतल को बख्शा है। मादा चीतल के सींग नहीं होते। वर्षा ऋतु के आगमन से पूर्व चीतल अपने सींगों को गिरा लेता है। वर्षा समाप्त के बाद सींग पुनः उगने लगते हैं।

चीतल का मुख्य निवास नम व शुष्क जलवायु वाले क्षेत्र हैं। खुले जंगल, पर्याप्त वनस्पति और पानी की उपलब्धता चीतल के रहने की अनिवार्य आवश्यकता है। भारत में यह मुख्य रूप से हिमालय की तराई के वनों तथा प्रायद्वीप के खुले जंगलों में पाया जाता है। हरिद्वार से गंगा की तराई में फैले जंगलों का वातावरण भी इसे बहुत रास आता है। समुद्री सतह से चार हजार फुट से अधिक ऊँचाई पर चीतल नहीं मिलते। खुले चरागाह वाले स्थान इसे खासतौर पर पसन्द हैं।

चीतल स्वभाव से एक सामाजिक तथा सहनशील प्राणी है। जंगल में यह काले हिरण, नील गाय और लंगूर जैसे शाकाहारी व सीधे–सादे पशुओं से दोस्ती रखता है। लंगूर और बन्दरों से इसकी मित्रता गहरी होती है। लंगूर जब किसी वृक्ष पर चढ़कर फल खाते

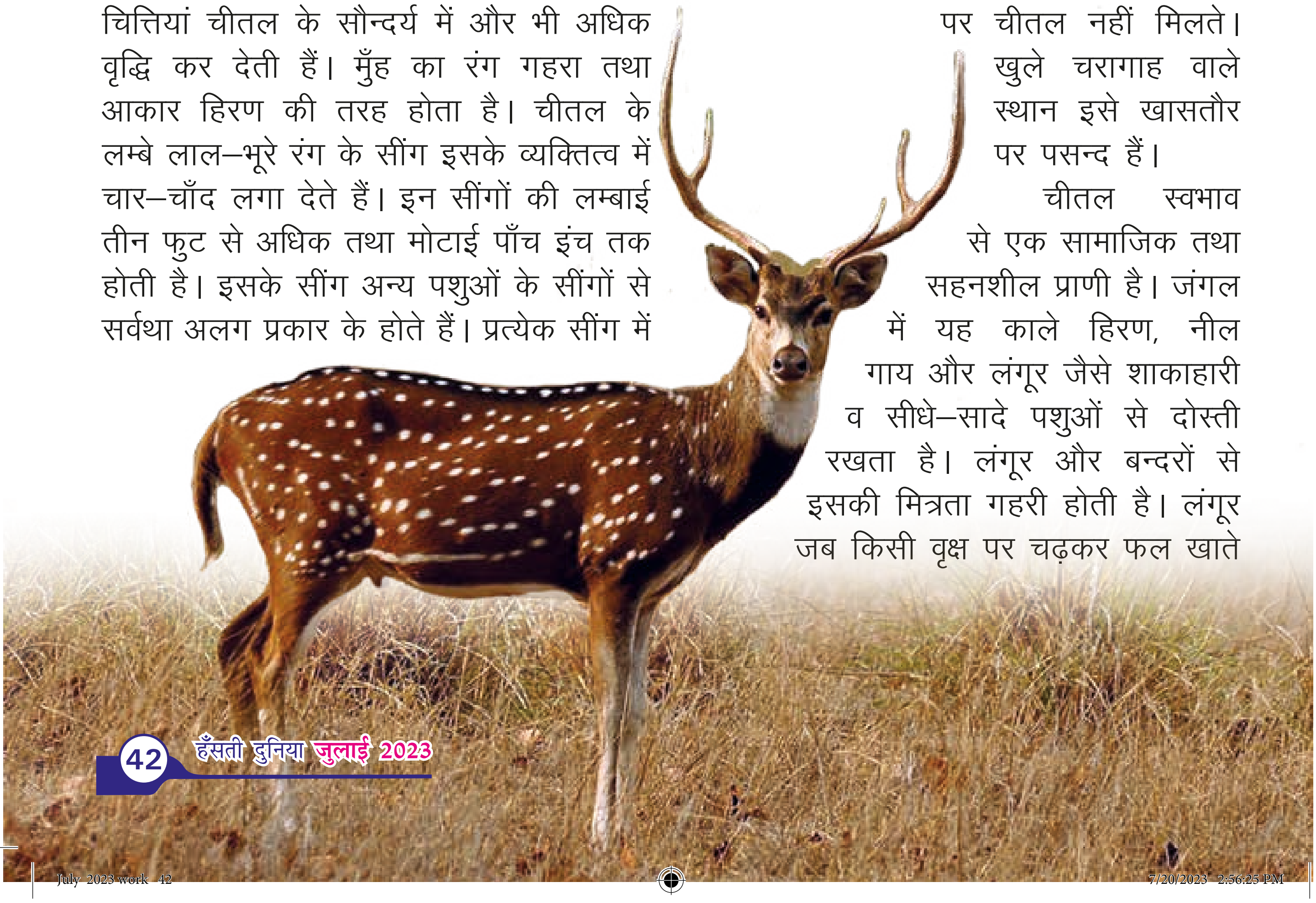

July 2023 work 42 7/20/2023 2:56:25 PM

हैं तो वे वृक्ष के नीचे खड़े चीतलों के लिए भी फल व पत्तियां तोड़कर फेंकते जाते हैं। इनका मुख्य आहार घास, हरी पत्तियां, फल–फूल आदि हैं।

चीतल एक क्रीड़ा–प्रेमी पशु है। पेट भर जाने के बाद यह अपने साथियों के साथ मस्ती में आकर खूब उछलकूद व धमाचौकड़ी मचाता है। खेल–खेल में भागकर एक–दूसरे का पीछा करते हुए ये मीलों दूर निकल जाते हैं।

खतरे अथवा आसन्न संकट की सूचना के संवहन के लिए ये सांकेतिक उपायों का सहारा लेते हैं। संकट का आभास होते ही इनका शरीर तन जाता है और गर्दन अकड़ जाती है। अपने अन्य साथियों को खतरे की सूचना देने के लिए यह अपनी पूँछ ऊपर उठाकर पांव जमीन पर पटकता है। इसके अतिरिक्त खतरे के समय एक विशेष प्रकार की ध्वनि निकालकर दूर चर रहे साथियों को सचेत कर देता है। चीतल दूसरे पशुओं के साथ आसानी से घुल–मिल जाता है। जंगल या चरागाह में चरने वाले अन्य पशुओं गाय, बैल, भेड़, बकरी आदि के साथ यह निडर होकर घास चरता रहता है।

हिरणों की प्रजाति का यह मनोहर पशु आजकल राष्ट्रीय प्राणी उद्यानों व चिड़ियाघर में देखा जा सकता है। चीतल की सुन्दरता ने आदमी को हमेशा मोहित किया है। ◆

पहेलियों के उत्तर :

1. सत्य, 2. माचिस, 3. परछाई, 4. पुस्तक, 5. इलायची, 6. आकाश में चन्द्रमा, 7. हारमोनियम, 8. चूहा, 9. जोसेफ एस्पडिन।

गर्मी में दूध
जल्दी क्यों फट जाता है?

बच्चो! आपने देखा होगा कि दूध को बिना उबाले कच्चा ही रख दिया जाये तो वह जल्दी ही खराब हो जाता है। गर्मी में तो और भी जल्दी खराब हो जाता है जबकि इसी दूध को गर्म कर दिया जाए तो काफी समय तक खराब नहीं होता।

बच्चो! क्या आप जानते हैं ऐसा क्यों होता है? कच्चे दूध के जल्दी खराब होने का कारण अनेक प्रकार के जीवाणु होते हैं। कच्चे रखे दूध में जीवाणु प्रजनन के द्वारा तेजी से बढ़ने लगते हैं। उस पर यदि मौसम गर्मी का हो यानि वायुमण्डल गर्म रहता है तो यह बढ़त काफी तीव्रता से होती है इसलिए जाड़ों की अपेक्षा गर्मियों में दूध जल्दी खराब हो जाता है। दूध खराब होने का मुख्य कारण जीवाणुओं के बढ़ने से दूध में अम्लीयता बढ़ने लगती है जो दूध में खट्टापन लाकर उसे फाड़ देती है। अगर इसी दूध को हम पहले ही गर्म कर दें तो दूध में जीवाणुओं की संख्या न के बराबर रहती है तथा पुनः जीवाणुओं को दूध में पर्याप्त संख्या बनने में काफी समय लग जाता है। इसलिए दूध को अधिक समय तक फटने से बचाने के लिए 5–6 घंटे के अन्तर पर गर्म किया जाता है। ◆

प्रस्तुति : विभा वर्मा

July 2023 work 43 7/20/2023 2:56:25 PM

पढ़ो और हँसो

एक अंतरिक्ष विज्ञानी लम्बी दूरी तक देख सकने वाली अपनी दूरबीन की सहायता से सितारों को देख रहा था।

इस दौरान साइंस लेबोरेटरी के चौकीदार ने आकाश पर एक तारा टूटता देखा तो वैज्ञानिक की तरफ देख कर बोला– मान गए सर, क्या शानदार निशाना लगाया है।

–बेटे, क्या नाम है आपका?

–जी बबलू!

–यह तो घर का नाम है, मैंने तो आपके स्कूल का नाम पूछा है?

–एम.आर.वी. मॉडल स्कूल।– बच्चा बोला।

सेठ : ये कैसा जमाना आ गया है कि ढूंढ़ने पर भी ऐसा कोई आदमी नहीं मिल रहा है जो झूठ न बोलता हो।

अमित : मेरे ख्याल में ऐसा एक आदमी है वह झूठ नहीं बोलता।

सेठ : अच्छा! उस नेक आदमी से मुझसे बात कराओ।

अमित : यह संभव नहीं इसलिए कि वह गूंगा है।

– प्रेरणा निषाद (इन्दौर)

बरसात में भीगने के कारण बिल्ली को तेज जुकाम हो गया। छींक–छींककर उसका बुरा हाल था।

वह चूहा चाचा की दुकान पर दवा लेने पहुँची और कहा– ऐसी दवा दो जिससे जल्दी आराम हो जाए।

चूहा चाचा बोला– बिल्कुल आराम पड़ जायेगा। तुम्हारे लिए एक दवा है बेजोड़। अब आगे से चूहे खाना बिल्कुल ही दो छोड़।

माँ : (बेटी से) दिशा, तुम पौधों के पास क्या कर रही हो?

दिशा : मम्मी, मैं पौधों को पानी दे रही हूँ।

माँ : लेकिन वहाँ तो तेज बारिश हो रही है।

दिशा : आप चिंता न करें माँ, मैंने छाता ले रखा है।

ऋतु : (रिया से) एक चोर मेरा पर्स छिनकर भाग गया।

रिया : (ऋतु से) तो फिर तुमने उसका पीछा किया कि नहीं।

ऋतु : बिल्कुल किया मैं तो उससे आगे भी निकल गई थी लेकिन जब मैंने पीछे मुड़कर देखा तो वह गायब था।

July 2023 work 44 7/20/2023 2:56:29 PM

देवेन : (साहिल से) आपका लड़का बहुत नालायक है।

साहिल : वह किस तरह?

देवेन : आपके लड़के की नकल करके मेरा लड़का भी फेल हो गया।

नीरज : (रंजन से) क्या तुम्हारा कभी मूर्खों से पाला पड़ा है?

रंजन : कोशिश तो बहुत की बचने की पर आज तुमसे बच न सका।

मैडम : (छोटे बच्चे से) बेटा, अपने पापा का नाम बताओ?

बच्चा : अभी नाम नहीं रखा। उन्हें हम पापा कहकर बुलाते हैं।

नेता जी भाषण करते हुए बोले– हमने राजनीति के मैदान में अच्छे–अच्छे पहलवानों को पछाड़ दिया है।

इतने में एक आवाज आई– आप क्यों सरेआम झूठ बोल रहे हैं, कल रात को ही आपकी पत्नी आपके पीछे बेलन लेकर दौड़ी थी और आप बिस्तर के नीचे छुप गये थे।

– रवि कुमार (अम्बाला)

पत्नी : (पति से) रात को मोबाइल चार्जिंग पर मत रखो।

पति : क्यों?

पत्नी : बैटरी ब्लास्ट हो जायेगी।

पति : तू चिंता मत कर मैंने बैटरी निकाल दी है।

सेठ : (नौकर से) तुमने लेटर बॉक्स में खत डाल दिया?

नौकर : नहीं सेठजी।

सेठ : क्यों नहीं डाला?

नौकर : कैसे डालता? लेटर बॉक्स के बाहर ताला लगा था।

अंकल : देखो मैं नालायक को लायक नहीं बना सकता।

बंटी : लेकिन मैं बना सकता हूँ।

अंकल : वो कैसे?

बंटी : 'ना' हटाकर।

मीना : कल तुम पार्टी में क्यों नहीं आई?

टीना : यार, कल मेरी BMW नहीं आई थी इसलिए।

मीना : BMW ?

टीना : बर्तन मांजने वाली।

– सोनी (खलीलाबाद)

July 2023 work 45 7/20/2023 2:56:32 PM

शान्ति निकेतन का वृक्षारोपण पर्व

विशेष आलेख : श्यामसुन्दर गर्ग

रवीन्द्रनाथ टैगोर एक महान कवि, कलाकार, शिक्षाविद् एवं मानवता के पुजारी थे। उन्होंने शान्ति निकेतन को एक ऐसा स्थान बनाया, जहाँ पहुँचकर मनुष्य अपने को सामाजिक कमजोरियों से कुछ ऊपर महसूस करने लगता है।

जीवन के कुछ कार्य ऐसे होते हैं यदि उनको कवि अथवा कलाकार के अनुरूप बनाया जाए तो वे उल्लास व उमंग में परिवर्तित हो जाते हैं। शान्ति निकेतन में ऐसे अनेक उत्सव व पर्व मनाये जाते हैं, जो ऋतुओं व मौसम पर आधारित होते हैं। जैसे वर्षा ऋतु में वृक्षारोपण पर्व, पौष मेला, माघ मेला, वैशाख मेला, बच्चों को अपनी कृतियों को बेचने के लिये 'आनन्द मेला' आदि पर्व समय–समय पर आयोजित होते हैं।

वृक्षारोपण पर्व प्रथम सत्र का प्रथम पर्व होता है। इसके लिए किसी उपर्युक्त स्थान पर किसी उपयुक्त अतिथि को निमंत्रित किया जाता है। जिस स्थान पर वृक्ष लगाने का आयोजन होता है, वहाँ एक गड्ढ़ा खोदकर उसके चारों तरफ अल्पना बना दी जाती है। जिस वृक्ष के पौधे का रोपण होना होता है, उस पौधे को वहाँ ले जाने के लिए छात्र–छात्राएं मिलकर एक डोली बनाते हैं, उसे पुष्प व फलों से सजाते हैं और फिर उसमें पौधे को रखा जाता है।

कुछ छात्र जो इस डोली को उठाकर ले जाते हैं, वे श्वेत वस्त्रों में सुसज्जित होते हैं। कुछ छात्राएं जो सफेद साड़ी व पीली चादर में सजी–संवरी होती हैं, वे डोली के पीछे चलती हैं। उनमें किसी के हाथ में शंख, तो किसी के हाथ में फूलमालाएं, अगरबत्ती, चंदन आदि होते हैं।

गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर के वर्षाऋतु के गीतों की झंकार के साथ–साथ जुलूस धीरे–धीरे आगे बढ़ता है। अपने स्थान पर पहुँचकर सब लोग अपना–अपना स्थान ले लेते हैं। कुछ मंत्र–पाठ, धूप–दीप आदि के उपरांत शंखनाद के साथ–साथ मुख्य अतिथि को माला पहनाकर उनसे वृक्षारोपण का आग्रह किया जाता है। वर्षा ऋतु के कुछ गीतों के बाद उत्सव समाप्त हो जाता है।

पेड़ लगाना एक महान कार्य है, जिसे कवि की कल्पना ने नया रूप दे दिया। कवि के साथ–साथ उन लोगों का भी उतना ही महत्व है, जिन्होंने कवि की कल्पना को साकार रूप देने में सहयोग प्रदान किया। इस प्रकार से छोटे–छोटे कार्यों को उत्सव का रूप देने से सृजनात्मक व आनन्दमयी वातावरण बनाया जा सकता है। ◆

July 2023 work 46 7/20/2023 2:56:33 PM

पेड़ लगाएं मिलकर सब

कविता : राजेश निषाद

तेज धूप जब आती है,
शरीर को झुलसाती है।
तरुवर की छाया पाकर,
हर राहत मिल जाती है।।

पेड़ हमें देते हैं फल,
छाया देते हैं हर पल।
ऑक्सीजन भी देते हैं,
भेद नहीं करते बिल्कुल।।

पेड़ लगाएं मिलकर सब,
कोई काटे इन्हें न अब।
पेड़ न होंगे यहाँ अगर,
सब कुछ होगा बेमतलब।।

बचेगा जब ये पर्यावरण,
तभी धरा पर होगा जीवन।
हरी–भरी होगी धरती,
खुशियाँ होंगी आंगन आंगन।।

दो बाल कविताएं : डॉ. दिनेश चमोला

किताब

बड़े ज्ञान की खान किताब।
सब धन से धनवान किताब।

गीता और कुरान किताब।
बड़ों की मान किताब।

बच्चों की है जान किताब।
देती यश का दान किताब।

कछुआ

चले छमाछम कछुआ राजा,
गाए गीत दमादम बाजा।
यह धरती पानी का राजा,
चले टमाटम यह बिन बाजा।।

चाल सलोनी, ढाल सलोनी,
करता फिर भी यह अनहोनी।
हरा दौड़ में खरहे तक को,
बन जाता यह धावक राजा।।

July 2023 work 47 7/20/2023 2:56:34 PM

आपके पत्र मिले

मैं हँसती दुनिया का नियमित पाठक हूँ। मुझे हँसती दुनिया बहुत अच्छी लगती है। इसमें प्रकाशित कहानियाँ, कविताएँ एवं लेख शिक्षाप्रद होते हैं।

अप्रैल अंक में प्रकाशित कहानी 'अनूठा न्याय' तथा प्रेरक–प्रसंग 'बुद्धि का कमाल' व चित्रकथा पढ़कर मन प्रसन्न हो उठा। हँसती दुनिया ज्ञानवर्द्धक के साथ–साथ एक अच्छे मार्गदर्शन का काम भी करती है।

– पूरन सिंह सैनी (राजनगर, दिल्ली)

मैं और मेरा परिवार हँसती दुनिया के नियमित पाठक हैं। हमें हँसती दुनिया का हर माह बेसब्री से इन्तजार रहता है। मुझे इसमें प्रकाशित शिक्षाप्रद और ज्ञानवर्द्धक बातें हमारे जीवन का मार्गदर्शन करती हैं।

'सबसे पहले' तथा 'सम्पूर्ण अवतार बाणी' के शब्दों की व्याख्या जो दी गई है वह हमें सत्गुरु के वचनों पर चलने में मदद करती है।

स्तम्भों में मुझे 'अनमोल वचन' तथा 'पढ़ो और हँसो' बहुत प्रिय हैं।

हमारे आस–पड़ोस के लोग भी हँसती दुनिया को पढ़कर इसकी तारीफ करते हैं तो बहुत अच्छा लगता है।

– प्रदीप कुमार (मोगा)

मैं हँसती दुनिया का बहुत पुराना पाठक हूँ। इस पत्रिका का मुझे बेसब्री से इन्तजार रहता है। इस पत्रिका के लेख और स्थायी स्तम्भ हमें ज्ञान और बौद्धिक बातों के साथ–साथ अन्य बहुत उपयोगी बातों की जानकारी भी देते हैं।

– हशमतराय भागवानी (इन्दौर)

आओ बच्चो

आओ बच्चो, चलो चले पढ़ने–लिखने,
छुट्टियों के अब हो गये दिन पूरे।
घर–आंगन में खूब लिये खेल,
चलो चलो अब चलें स्कूल।।
छुट्टियों में जो सिखा तुमने,
उसे भी रखना तुम याद सदा।
किस्से सैर–सपाटों के यारों से कहना,
समय से सोना, समय से जागना।।
हो तैयार, सबसे पहले स्कूल जाना,
पढ़ना–लिखना, आगे बढ़ना।
हो सके उतने, अपने काम आप ही करना,
सपने मम्मी–पापा के तुम पूरे करना।।

प्रस्तुति : अनिल कुमार

हँसती दुनिया

हँसती दुनिया पत्रिका निराली,
जीवन में भरती खुशहाली।

हँसती दुनिया ज्ञान बढ़ाये,
बच्चों का संसार सजाये।

हँसती दुनिया पत्रिका न्यारी,
हर मन को लगती प्यारी।

हँसती दुनिया पढ़ना सीखो,
हँसकर जीवन जीना सीखो।

हँसती दुनिया जब तक न आती,
इन्तजार करवाती रहती।

प्रस्तुति : रामअवध राम

July 2023 work 48 7/20/2023 2:56:35 PM

मई अंक रंग भरो के श्रेष्ठ चित्र

1- rk:'k — 10 o"k
499, गुरु नानक नगरी,
गली नं. 7, मलोट (पंजाब)

2- u{k lBh — 10 o"k
499, गुरु नानक नगरी,
गली नं. 7, मलोट (पंजाब)

3- fef'kdk 'kek — 10 o"f
551/ए, न्यू शास्त्री नगर,
पठानकोट (पंजाब)

4- fpjkx ;kno — 7 o"k
136/सी, प्रथम मंजिल,
अनुसूया मडकर हाउस,
वर्ली (मुंबई)

5- _f) lluh — 8 o"k
आर.जेड.जी., 846–ए,
राजनगर (दिल्ली)

इनके अतिरिक्त जिनकी प्रविष्ठियों को पसन्द किया गया वे हैं-

सुजाता (पंजाला, कांगड़ा)
मानवी बंसल (मेन बाजार, लहरागागा),
हितेश खुराना (शास्त्री नगर, फरीदाबाद),
अंबर लाम्बा (वसुंधरा एंक्लेव, दिल्ली),
गगनप्रीत कौर (हांडीखेड़ा, अम्बाला),
अद्विक खन्ना (अम्बाला कैंट),
स्वर्णजीत (आदर्श नगर, फगवाड़ा),
कौशिकी (बिलासपुर),
गोविंद (दीप नगर, जालंधर),
इश्मित जैन (सेक्टर–19 सी, चंडीगढ़),
अजय कुमार (नेठवा, चुरू),
अद्वितीय मेहरा (सुन्दर नगर, अजमेर),
मानव (अवतार एंक्लेव, दिल्ली),
जिया (रानी बाग, दिल्ली),
खुशी (अशोक विहार कॉलोनी, नकोदर),
शिवम (पलवल),
हार्दिक गुप्ता
(रायसिंह नगर, श्रीगंगानगर)।

tykb vd jx Hkjk

पृष्ठ 50 पर एक चित्र दिया गया है। इस चित्र में सुन्दर–सुन्दर रंग भरकर 25 जुलाई तक कार्यालय 'हँसती दुनिया', एडमिनिस्ट्रेटिव ब्लॉक, निरंकारी सरोवर कॉम्प्लेक्स, दिल्ली–110009 को भेज दें।

- पांच श्रेष्ठ चित्रों के प्रतिभागियों के नाम (पते सहित) सितम्बर अंक में प्रकाशित किये जाएंगे।
- चित्र के नीचे दिये गये रिक्त स्थान पर अपना नाम और पता अवश्य भरें।
- 15 वर्ष की आयु तक के बच्चे ही रंग भरकर भेज सकते हैं।
- कृपया चित्र में रंग भरकर डाक द्वारा ही भेजें। 'ई–मेल' या 'व्हाट्सएप्प' से नहीं।

कृपया चित्र में रंग भरकर डाक द्वारा ही भेजें। 'ई-मेल' या 'व्हाट्सएप्प' से नहीं।

July 2023 work 49 7/20/2023 2:56:35 PM

रंग भरो

नाम : .... आयु : ....

पिता का नाम : ....

पूरा पता : ....

....

.... पिन कोड : ....

July 2023 work 50 7/20/2023 2:56:35 PM

Nirankari Radio
radio.nirankari.org
24x7
KIDS DIVINE
ek ruhani muskaan
kids.nirankari.org
Catch the latest episode
on 23rd of every month
NEWS DIVINE
www.nirankari.org
Catch the latest episode
on 10th of every month
IT'S LIVE,
DOWNLOAD NOW
SNM
App Store
Google Play
सुनो तराने
नए पुराने
Nirankari Radio
Bhakti Sangeet
radio.nirankari.org
Catch the latest episode
on 20th of every month
महफ़िल
ए
रूहानियत
Mehfil-E-Ruhaniyat
Special programme
SV
SOUL VIBES
radio.nirankari.org
Catch the latest episode
on Last Friday of every month
Voice DIVINE
radio.nirankari.org
Catch the latest episode
on 1st & 16th of every month
Video & Audio Webcasts on www.nirankari.org - Every month
SANT NIRANKARI MISSION

Prescribed Dates 21st & 22nd , Date of Publication: 16th & 17th (Advance Month)
Posted at LPC Delhi RMS Delhi - 110006

Registered with the : Delhi Postal Regd. No. DL (N) 136/2021-2023
Registrar of Newspaper : License No. U (DN) -23/2021-2023
For India Under RNI No. 25672/1973 : Licensed to post without Pre-payment

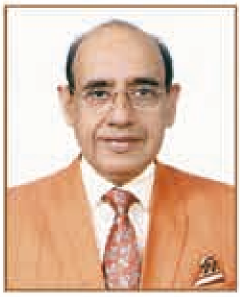

NIRANKARI JEWELS

78-84, Edward Line, Kingsway Camp, Delhi, 110009
Near G.T.B. Nagar Metro Station Gate No. 4

011-42870440, 42870441, 47058133
nirankari_jewels@hotmail.com
www.nirankarijewels.com
@nirankarijewelsdelhi
Nirankari Jewels Pvt. Ltd.

Monday Closed
Customer Care : 9818883394